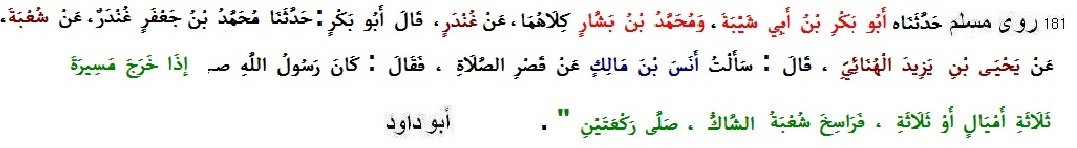
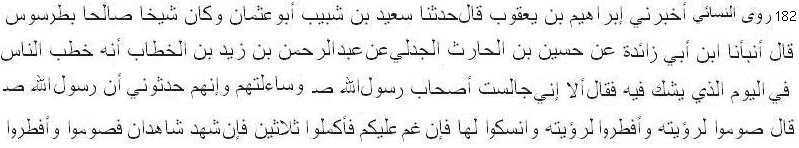
**md‡i mvjvZ Kmi Kiv**



181 মুসলিম †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .......... AvbvQ (iv.) e‡jb, bex (m.) hLb 3 gvBj A\_ev 3 dimL `~ieZx RvqMvq †h‡Zb ZLb (4 ivKAvZ mvjvZ) 2 ivKAvZ co‡Zb| (আরও আহমদ, আবু দাউদ, আবু আওয়ানা; সহীহ) [[1]](#footnote-1)

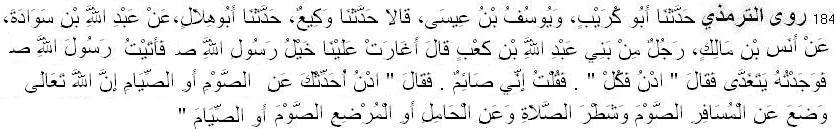
**mIg**



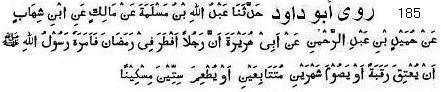
182 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............... Ave`yi ingvb web hv‡q` (iv.) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**Pvu` †`‡L mIg I nR Ki| hw` (†gN, Kzqvkvi Kvi‡Y) bv †`Lv hvq Z‡e wZwik c~iv Ki| Avi `yB Rb (gymwjg) mevÿx ¯^vÿ¨ †`q Z‡e (Gi wfwË‡Z) mIg I BdZvi Ki|Ó**  (mnxn)



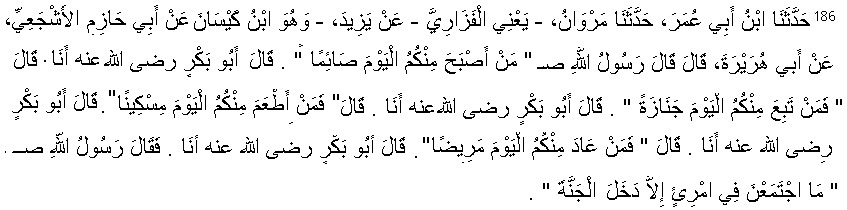
**183 †nvgvB`x** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............ Dgi (iv.) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**hLb m~h© Wy‡e hv‡e ZLb mIgcvjbKvix BdZvi Ki‡e**|Ó (AviI t আহমদ, দারেমী, বুখারী, মুসলিম, আবু দাউদ, তিরমিযী)



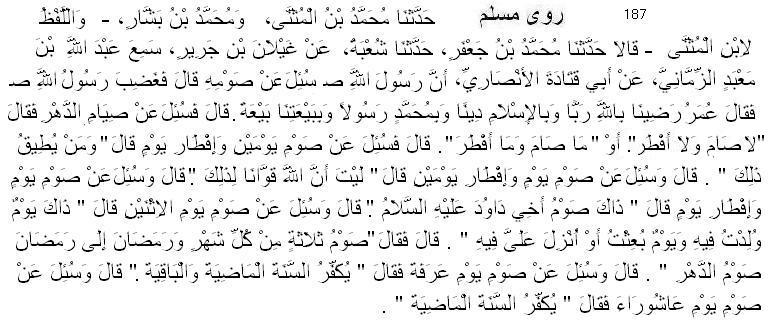
184 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ........... AvbvQ (iv.) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**Avjøvn gymvwd‡ii Dci †\_‡K A‡a©K mvjvZ iwnZ K‡i‡Qb Ges mIg gyjZex K‡i‡Qb Avi Mf©eZx gwnjv I `ya`vbKvix gwnjv †\_‡KI mIg gyjZex K‡i‡Qb**|Ó (AviI t bvQvqx, Avey `vD`; mnxn)



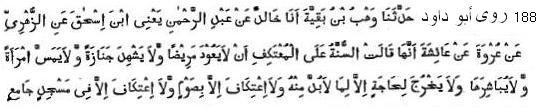
185 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............ Avey ûivqiv (iv.) e‡jb, GK †jvK igvhv‡b mIg †fs‡M †d‡jb| bex (m:) Zv‡K GKwU `vm Avhv` Kivi A\_ev GKvav‡i `yB gvm mIg ivLvi A\_ev lvURb wgQKxb‡K LvIqv‡bvi Av‡`k w`‡jb| (mnxn) [[2]](#footnote-2)



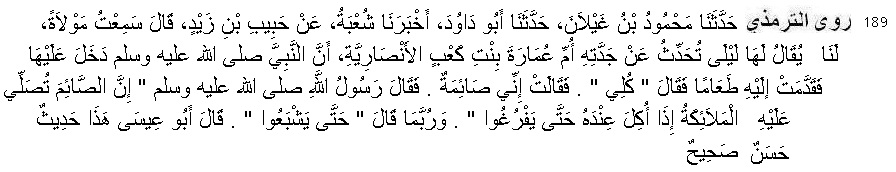
186 মুসলিম রেওয়ায়েত করেছেন ............ আবু হুরাইরা থেকে; একদিন রসুল (স.) বললেন, ‘তোমাদের মধ্যে কে আজ সওম রেখেছ?’ আবু বকর (রা.) বলেন, ‘আমি রেখেছি।’ এরপর রসুল (স.) বললেন, ‘তোমাদের মধ্যে কে আজ মিসকিনকে খাবার খাইয়েছ?’ আবু বকর (রা.) বললেন, ‘আমি।’ রসুল (স.) বললেন, ‘তোমাদের মধ্যে কে আজ কোন জানাজায় অংশগ্রহণ করেছ?’ আবু বকর (রা.) বললেন, ‘আমি।’ রসুল (স.) বললেন, ‘তোমাদের মধ্যে কে আজ কোন অসুস্থ লোকের খোঁজ নিয়েছ?’ আবু বকর বললেন, ‘আমি।’ তখন রসুল (স.) বলেন, ‘যার মধ্যে এসব কাজ জমা হবে, সে জান্নাতে যাবে।’ (সহীহ)



187 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............... Avey KvZv`v (iv.) †\_‡K, bex (m:) ‡K †mvgev‡ii mIg m¤ú‡K© mIqvj Kiv nj| bex (m:) e‡jb, Ò**†mvgev‡i Avwg Rb¥ wb‡qwQ, †mvgev‡i Avwg byeyIqvZ †c‡qwQ A\_ev †mvgev‡i Avwg c‡njv Inx †c‡qwQ**|Ó [[3]](#footnote-3)



188 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ........... Avwqkv (iv:) e‡jb, BwZKvdKvixi Rb¨ mybœZ n‡”Q Amy¯’ e¨w³‡K †`L‡Z hv‡e bv, Rvbvhvq hv‡e bv, wewe‡K Qz‡e bv, wewei mv‡\_ ‡gjv‡gkv Ki‡e bv, nvRZ (†ckve-cvqLvbv) Qvov †ei n‡e bv| mIg Qvov BwZKvd nq bv| RygyAv gmwR` Qvov BwZKvd nq bv| [[4]](#footnote-4)

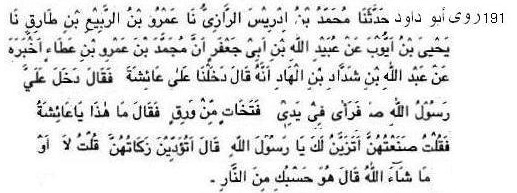


189 তিরমিজী ..... রেওয়ায়েত করেছেন হাবীব ইবনু যায়িদ (রহঃ) থেকে, তিনি বলেন, আমাদের জনৈকা আযাদকৃত দাসী লায়লাকে উম্মু উমারা [নুসাইবাহ] বিনত কা’ব আল আনসারিয়্যা (রা.) থেকে বর্ণনা করতে শুনেছি যে, নবী স. একবার তাঁর বাড়ি এলেন। তখন তিনি নবী স. এর সামনে খাবার পেশ করলেন। নবি তাকে বললেন, তুমি খাও। তিনি বললেন আমি তো সায়িম। রসুল স. বললেন, সায়িমের নিকট যদি কেউ খায় তবে খাবার শেষ না করা পর্যন্ত ফিরিশতাগন সায়িমের জন্য দু’আ করতে থাকেন। (আরও: আহমদ, দারেমী, ইবনে মাজাহ, ইবনে খুজাইমা; তিরমিযী বলেন, হাদীসটি হাসান সহীহ)

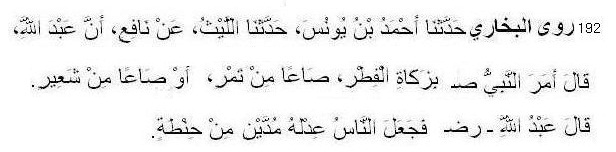
**hvKvZ I mv`Kv**



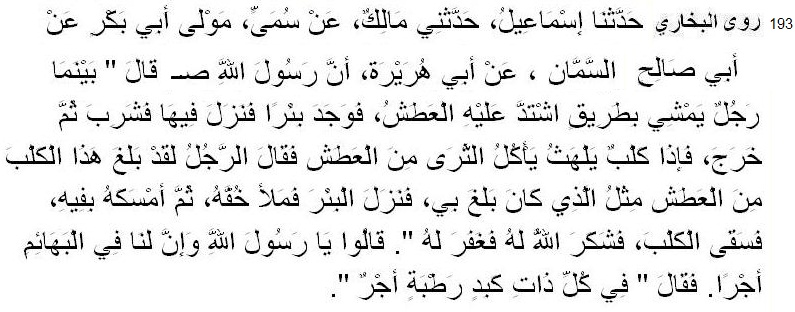
190 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............... Avjx (iv.) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡j‡Qb, Ò**†Zvgvi Kv‡Q hLb 200 w`invg Rgv nIqvi ci 1wU cyiv eQi Rgv \_vK‡e ZLb Zvi Rb¨ 5 w`invg hvKvZ w`‡Z n‡e| hLb 20 w`bvi Rgv nIqvi ci 1wU cyiv eQi Rgv \_vK‡e ZLb Zvi Rb¨ Avav w`bvi hvKvZ w`‡Z n‡e|Ó** (nvmvb) [[5]](#footnote-5)



191 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............ Avwqkv (iv.) †\_‡K: im~jyjøvn (m.) Avgvi nv‡Z Pvuw`i AvswU †`L‡jb Ges ej‡jb, Ò**GUv Kx?**Ó Avwg ejjvg, ÒAvwg GMywj evwb‡qwQ Avcbvi Kv‡Q iIbK evov‡bvi Rb¨|Ó wZwb ej‡jb, Ò**Zzwg wK Gi hvKvZ `vI?Ó** Avwg ejjvg, Òbv|Ó wZwb ej‡jb, Ò**†Zvgv‡K Rvnvbœv‡g †bIqvi Rb¨ GUvB h‡\_ó**।**Ó** (mnxn) [[6]](#footnote-6)

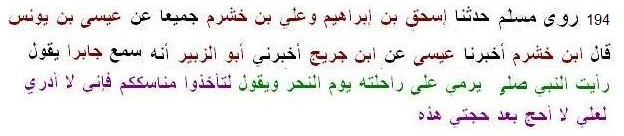


192 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............... Be‡b Dgi (iv.) †\_‡K: im~jyjøvn (m.) GK mvÕ †LRyi A\_ev GK mvÕ he (বার্লি) mv`Kv wdZi wba©viY K‡i‡Qb [[7]](#footnote-7)

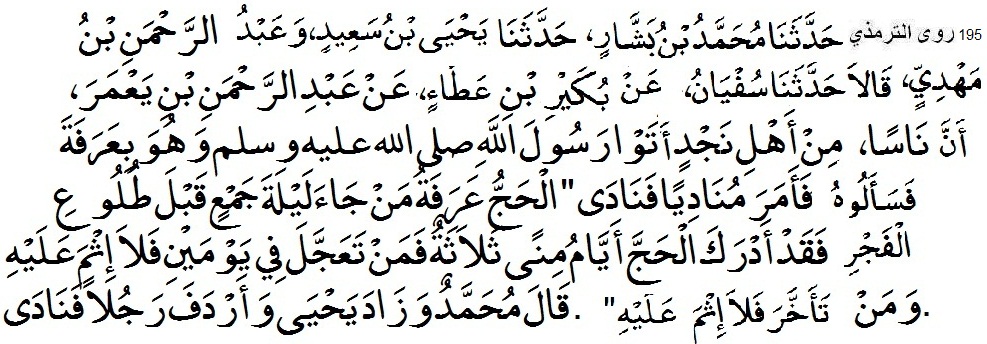


193 বুখারী রেওয়ায়েত করেছেন ..... আবূ হুরাইরাহ (রা.) হতে, আল্লাহর রসূল (স.) বলেন, একদিন এক ব্যক্তি রাস্তায় চলার পথে অত্যন্ত তৃষ্ণার্ত হল। তারপর একটি কূয়া দেখতে পেয়ে তাতে সে নেমে পড়ল এবং পানি পান করল। উপরে উঠে এসে সে দেখতে পেল একটা কুকুর হাঁপাচ্ছে আর পিপাসার দরুন ভিজে মাটি চেটে খাচ্ছে। লোকটি বলল, এ কুকুরটির তেমনি পিপাসা পেয়েছে, যেমনি আমার পিপাসা পেয়েছিল। তারপর সে কূয়ার মধ্যে নামল এবং নিজের মোজা পানি ভর্তি করে এনে কুকুরটিকে পান করাল। আল্লাহ তার এ কাজ কবূল করেন এবং তাকে ক্ষমা করে দেন। সাহাবীগণ বলল, হে আল্লাহর রসূল! পশুদের ব্যাপারেও কি আমাদের জন্য পুণ্য রয়েছে? তিনি বললেন, প্রাণী মাত্রের সেবার মধ্যেই পুণ্য রয়েছে। [[8]](#footnote-8)

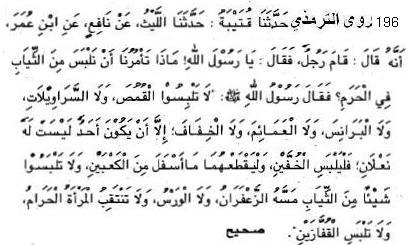
**হজ্জ ও কুরবানী**



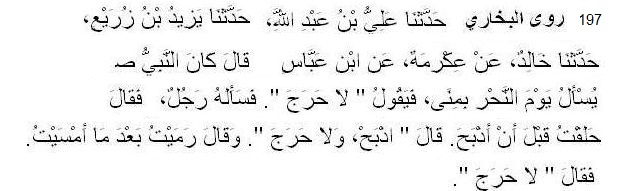
194 মুসলিম রেওয়ায়েত করেছেন ..... জাবির (রা.) হতে, রসূলুল্লাহ (স.) বলেন, তোমাদের হজ্জ ও উমরা পালনের নিয়ম আমা থেকে শিখে নাও। কারণ আমি জানি না এই হজ্জের পরে আমি হজ্জ করতে পারব কি না।



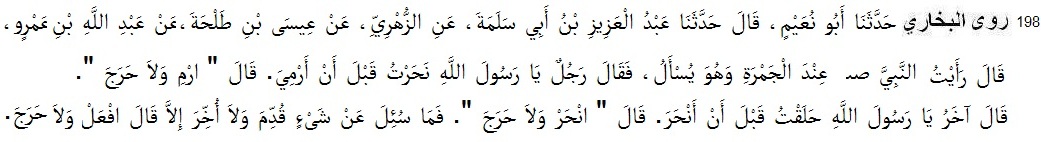
195 তিরমিযী রেওয়ায়েত করেছেন ..... ইবনে ইয়ামার (রা.) হতে, রসূলুল্লাহ (স.) বলেন, হজ্জ আরাফাত যে মুজদালিফার রাতে ফজর সলাতের আগেই আরাফাতে এসে পৌঁছলো তার হজ্জ পূর্ণ হলো। (আরও: আহমদ, দারেমী, নাছায়ী) [[9]](#footnote-9)



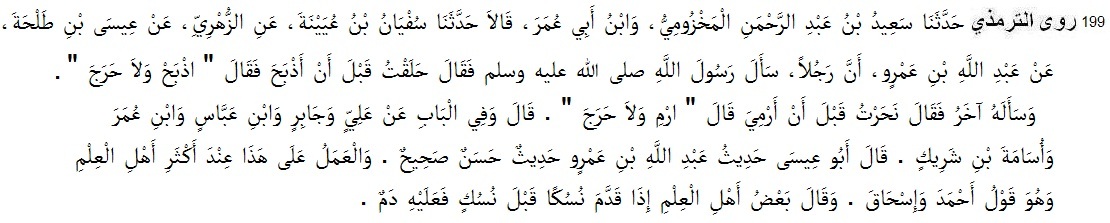
196 তিরমিযী রেওয়ায়েত করেছেন ..... ইবন উমার (রা.) বলেন, রসুল (স.)-কে এক লোক সওয়াল করল, ইহরামকারীকে কী ধরণের পোশাক পরতে আদেশ করেন? রসুল (স.) বলেন, সে কামীস (জামা), টুপি, পাগড়ী এবং মোজা পরবে না। তবে কারো জুতা না থাকলে সে মোজা পরবে যা পায়ের গোছার নিচে থাকবে। সে জাফরান ও ওয়ারস রংয়ে মিশ্রিত কাপড় পরবে না। ইহরামকারী নারীরা যেন চেহারায় নেকাব না ঝুলায় এবং দস্তানা না পরে। (সহীহ; আরও আবু দাউদ)



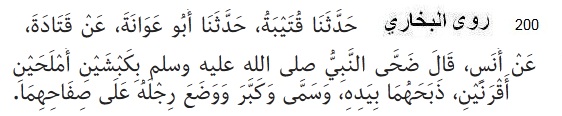
197 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b AveŸvQ (ivt) †\_‡K, †h Kzievbxi cï h‡en Kivi Av‡MB gv\_v gyÛb Kij A\_ev Abyi~c †Kvb KvR Av‡M c‡i Kij Zvi m¤ú‡K© bex (mt)‡K mIqvj Kiv n‡j wZwb e‡j‡Qb: Ò**G‡Z †Kvb †`vl †bB, †Kvb †`vl †bB**|Ó (eyLvix: wKZveyj gvbvwmK)



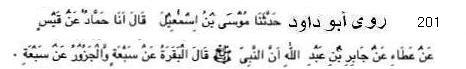
198 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b Avgi (ivt) e‡j‡Qb: ÒKzievbxi w`b (10B hyjn¾) ivm~j (mt) †K †`Ljvg hLb Rvgivq Ae¯’vb KiwQ‡jb, Zv‡K mIqvj Kiv n‡jv, Avwg KsKi wb‡ÿc Kivi Av‡MB Kzievbx K‡iwQ| wZwb ej‡jb, Ò**GLb KsKi wb‡ÿc Ki; G‡Z †Kvb †`vl †bB**| Avi GK e¨w³ ej‡jv, Avwg Kzievbx Kivi Av‡MB gv\_v gyÛb K‡iwQ| wZwb GeviI ej‡jb: Ò**Zzwg Kzievbx Ki G‡Z †Kvb †`vl †bB**| eY©bvKvix e‡jb, Av‡M ev c‡i Kiv m¤ú‡K© Hw`b †h hv-B mIqvj K‡i‡Q, wZwb RIqv‡e e‡j‡Qb: **GLb AciwU Ki; G‡Z †Kvb †`vl †bB**|Ó (eyLvix, G‡jg Aa¨vq) [[10]](#footnote-10)



199 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b Avgi (ivt) e‡jb, GK e¨w³ im~j (m.)-‡K mIqvj Kij, Avwg h‡en Kivi Av‡MB gv\_v gyÛb K‡iwQ| wZwb ej‡jb: Ò**GLb h‡en Ki, G‡Z †Kvb †`vl †bB**| Ab¨ GKRb mIqvj Kij, KsKi gvivi Av‡MB Avwg Kzievbx K‡iwQ| wZwb ej‡jb: Ò**GLb KsKi gvi, G‡Z †Kvb †`vl †bB**|Ó

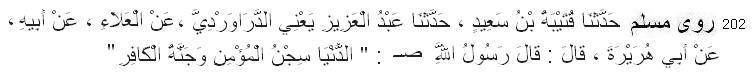


200 বুখারী রেওয়ায়েত করেছেন ..................... আনাস (রা.) বলেন, নাবী (স.) দুটি সাদা-কালো বর্ণের শিংবিশিষ্ট ভেড়া কুরবানী করেন। তিনি ভেড়া দুটির পার্শ্বদেশে তার পা রেখে তাছমিয়া (বিসমিল্লাহ) বলেন, তাকবীর (আল্লাহু আকবার) বলে নিজ হাতেই সেই দুটিকে যবাহ করেন।

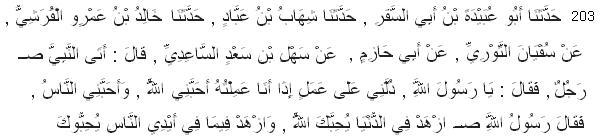


201 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Rvwei (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡j‡Qb: Ò**GKwU Miæ mvZR‡bi cÿ †\_‡K Ges GKwU DUI mvZ R‡bi cÿ †\_‡K Kzievbx Kiv †h‡Z cv‡i**|Ó [[11]](#footnote-11)

**`ywbqvi nKxKZ**



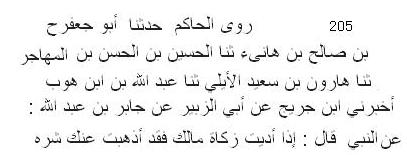
202 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey nyivqiv (ivt) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**`ywbqv Cgvb`vi‡`i Rb¨ K‡q`Lvbv Ges Kvwdi‡`i Rb¨ RvbœvZ**|Ó (AviI t Avng`, wZiwghx) [[12]](#footnote-12)



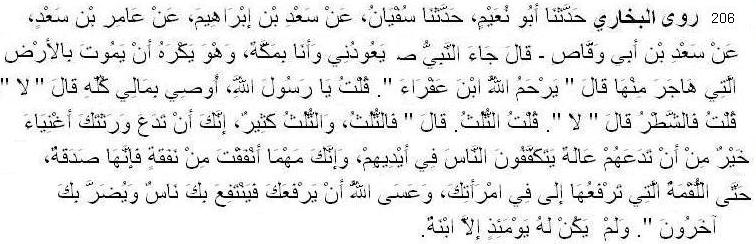
203 **Be‡b gvRvn** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Qvnj web QvÕ` Qv-C`x (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Ò**`ywbqvi cÖwZ wb‡j©vf nI, Avjøvn †Zvgv‡K fvjevm‡eb|Ó** (mb` nvmvb) [[13]](#footnote-13)



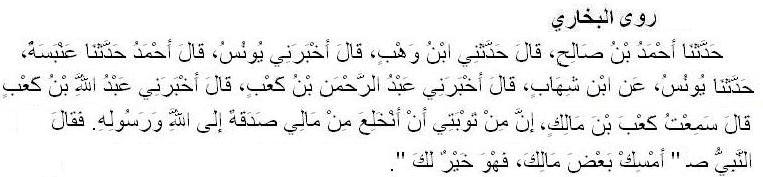
204 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. LvIjvn web‡Z Kv‡qQ (ivt) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**†h `ywbqv‡K nK Dcv‡q †bq Avjøvn Zv‡Z eiKZ †`b**|Ó (AviI t Zvevivbx ÔAvgivn webZyj nvwiQ (ivt) †\_‡K; mb` nvmvb)



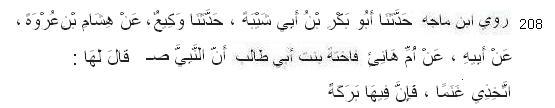
205 **nvwKg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Rvwei (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**hw` Zzwg ‡Zvgvi gv‡ji hvKvZ Av`vq Ki Zvn‡j wbR †\_‡K Zvi ÿwZ‡K Zzwg `~i K‡i w`‡j**|Ó



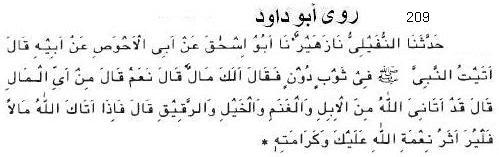
206 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. QvÕ` web Avey Iqv°vm (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**†Zvgvi IqvwiQ‡`i‡K abx †i‡L hvIqv DËg H Ae¯’vi ‡P‡q †h Zviv `wi`ª n‡q †jv‡Ki Kv‡Q nvZ cv‡Z|**Ó (AviI t gymwjg mnxn)



207 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. KvÕe web gvwjK (iv:) Zvi Zvgvg gvj `vb Ki‡Z PvB‡j bex (m.) ej‡jb, Ò**†Zvgvi gv‡ji wKQz †i‡L `vI; †Zvgvi Rb¨ fv‡jv n‡e**|Ó(eyLvix)



208 **Be‡b gvRvn** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Dg‡g nvbx dvwLZv (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**†Zvgiv QvMj cvjb Ki; I‡Z eiKZ Av‡Q**|Ó

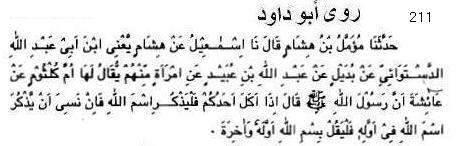


209 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Aveyj AvnIqvm (ivt) †\_‡K, GK`v bex (m.) Zvi GK mvnvex‡K e‡j‡Qb, Ò**Avjøvn hLb †Zvgv‡K m¤ú` `vb K‡i‡Qb ZLb wbqvgZ I KvivgZ cÖKvk¨ ivL**|Ó (Avey `vD` nv. 4063; AviI t Avng`, bvQvqx)

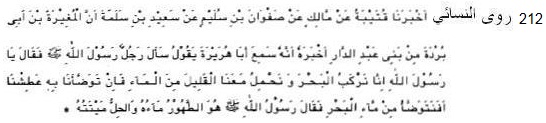
**Lv`¨, cvbxq**



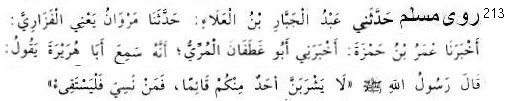
210 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. nyhvqdv (ivt) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**kqZvb †mB Lv`¨‡K nvjvj K‡i †bq †h Lv‡`¨i Dci wemwgjøvn ejv nq bv**|Ó (AviI t Avey `vD`, mnxn)



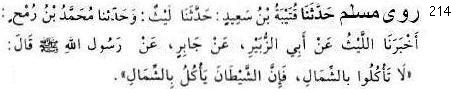
211 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkv (iv:) †\_‡K: im~j (m.) e‡jb, Ò**hLb** **†Zvgv‡`i †KD Lv`¨ Lvq ZLb †m †hb Avjøvni bvg whwKi K‡i, hw` †m Avjøvni bvg whwKi Ki‡Z fy‡j hvq Z‡e †m †hb e‡j wemwgjøvwn dx AvIqvwjwn Iqv AvwLwin**|Ó (AviI t wZiwghx; wZiwghx mnxn e‡j‡Qb)



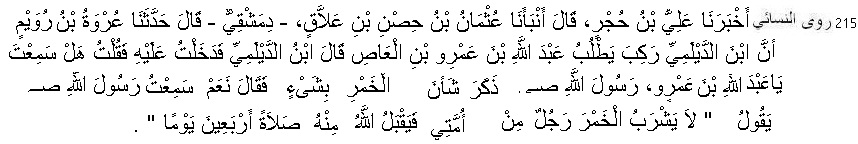
212 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey nyivqivn (iv:) †\_‡K: bex (m:) †K mvM‡ii cvwb m¤ú‡K© ejv nj, bex (m:) ej‡jb, Ò**Ii cvwb cweÎ Ges Ii g„Z cÖvYx nvjvj**|Ó (AviI t wZiwghx, Avey `vD`, Be‡b gvRvn, Be‡b LyRvBgvn; mnxn) [[14]](#footnote-14)



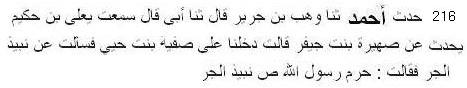
213 মুসলিম রেওয়ায়েত করেছেন ......... আবূ হুরায়রা (রা.) থেকে; রসূল স. বলেছেন, তোমাদের কেউ যেন কখনো দাঁড়িয়ে পান না করে। কেউ ভুলে গেলে সে যেন পরে বমি করে ফেলে।



214 মুসলিম রেওয়ায়েত করেছেন ......... জাবির (রা.) থেকে; রসুল স. বলেছেন, তোমরা বাম হাতে খাবে না। কারণ শয়তান বাম হাতে খায়।

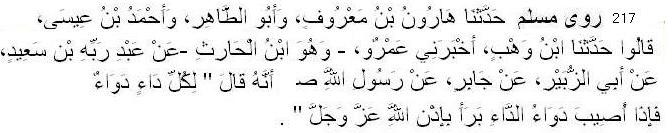


215 bvQvqx †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ........... Be‡b Avgi (ivt) †\_‡K, im~j (m.) e‡j‡Qb, Ò**Avgvi D¤§‡Zi †KD g`cvb Ki‡j Avjøvn Pwjøk w`b Zvi mvjvZ Keyj Ki‡eb bv**|Ó (AviI t Avng`; mnxn)



216 আহমদ রেওয়ায়েত করেছেন ......... সুহায়রা থেকে; তিনি সাফিয়াহ বিনতে হুইয়াইকে খেজুর ভিজানো নবীযের বিষয়ে সওয়াল করেন। সাফিয়াহ বলেন, রসুল (স.) খেজুর ভিজানো নবীয হারাম করেছেন।

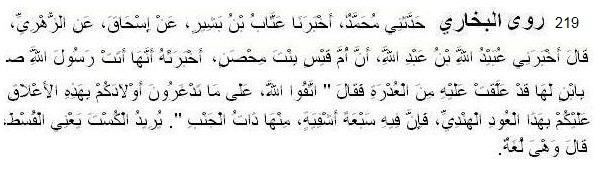
**†ivM, gIZ, Jla**



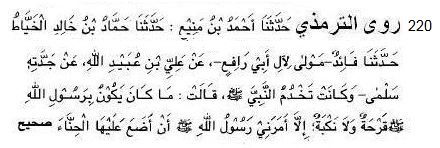
217 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Rvwei (ivt) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡j‡Qb, Ò**me †iv‡MiB `vIqv (Jla) Av‡Q| hw` †Kvb †iv‡Mi wVK `vIqv †`Iqv nq, Zvn‡j Avjøvni AbygwZ‡Z †ivM Av‡ivM¨ nq**|Ó



218 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Iqv‡qj nv`ivgx (iv.) †\_‡K; ZvwiK Be‡b myIqvB` (iv) Jla wnQv‡e g‡`i e¨envi wel‡q im~jyjøvn (m.)‡K mIqvj Ki‡jb| ZLb wZwb e‡jb, Ò**†mUv †Zv Jla bq; eis Zv e¨vwa**| (mnxn)



219 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. D‡¤§ Kv‡qm web‡Z wgnmvb (ivt) e‡jb, Avwg Avgvi †eUv‡K wb‡q im~j (m.) Gi Kv‡Q Gjvg| Zvi Mjve¨\_vi Rb¨ Zvexh Szwj‡qwQjvg| im~jyjøvn (m.) ej‡jb, Ò**Zvex‡hi Øviv †Zvgv‡`i mšÍvb‡`i Kx DcKvi Ki‡Z PvI? eis ‡Zvgv‡`i DwPZ AvMi KvV G‡¯Ígvj Kiv**|Ó (AviI t mnxn, Avey `vD`)



220 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. D‡¤§ ivwd mvjgv gIjv mvwdq¨v (ivt) e‡jb, Òbex (m.) Gi ÿZ n‡j ev KvUv dzU‡j †mLv‡b wZwb †g‡nw` jvMv‡Zb|Ó (AviI t Be‡b gvRvn; mnxn)

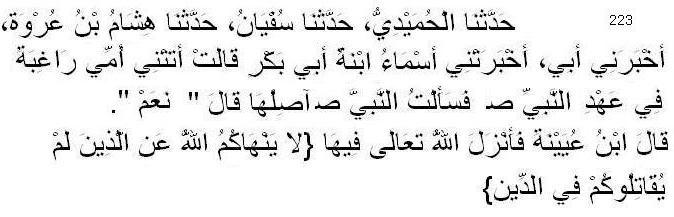
**cvwievwiK wR‡›`Mx**



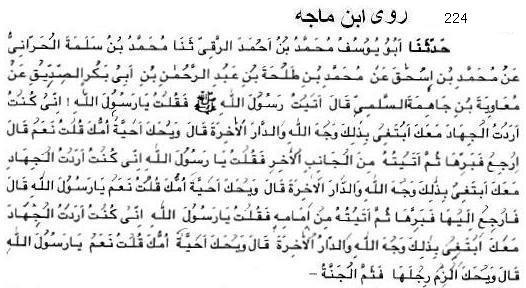
221  **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............... Be‡b Avgi (iv.) †\_‡K; bex (mt) e‡jb, Kexiv ¸bv‡ni GKwU n‡”Q AveŸvAv¤§v‡K Awfkvc †`qv| †jv‡Kiv ejj GKRb gvbyl wKfv‡e AveŸv Av¤§v‡K Awfkvc †`q ? bex (m.), e‡jb, **GKRb Ab¨R‡bi AveŸv‡K Awfkvc †`q ZLb Gi RIqv‡e †jvKwU Zvi AveŸv‡K Awfkvc †`q**|



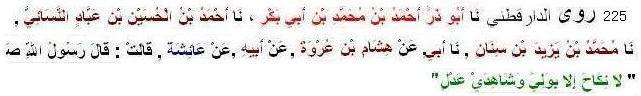
222 Avng` †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey Dgvgv Avbmvix (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Ò**Kexiv ¸bvnmg~‡ni ga¨ †\_‡K K‡qKwU we‡kl ¸bvn Avjøvni mv‡\_ kixK Kiv, wcZvgvZvi Aeva¨Zv Ges m¤ú` MÖv‡mi D‡Ï‡k¨ wg\_¨v KQg Kiv**|Ó (AviI t wZiwghx, Be‡b wneŸvb; mnxn)



223 **ûgvB`x** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. AvQgv web‡Z Avey eKi (iv:) †\_‡K, Avwg bex (m.) †K ejjvg, Avgvi Av¤§v G‡m‡Qb wKš‘ wZwb Bmjvg †\_‡K wegyL| Avwg wK Zvi mv‡\_ fv‡jv e¨envi Kie? bex (m.) ej‡jb, Ò**Zvi mv‡\_** **fv‡jv e¨envi Ki|Ó** (AviI t mnxn eyLvix, bvQvqx)



224 **Be‡b gvRvn** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. bex (m.) ej‡jb, Ò**†Zvgvi gv‡qi cv AvK‡o ai, ILv‡bB RvbœvZ|Ó**(Be‡b gvRvn nv. 2771; AviI t bvQvqx)



215 দারাকুতনী রেওয়ায়েত করেছেন ......... আয়িশা (রা.) থেকে; রসূলুল্লাহ (স.) বলেন, “অভিভাবক ও দুইজন স্বাক্ষী ছাড়া কোন বিবাহ নেই।” (আরও: তাবারানী; হাদীছটি দারেমী আবু মূছা ও আবু বুরদা রা. থেকে রেওয়ায়েত করেছেন) [[15]](#footnote-15)



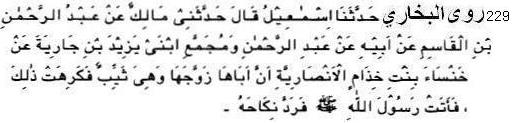
226 **Be‡b gvRvn** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey nyivqivn (ivt) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡j‡Qb, Ò**†Kvb bvix Ab¨ bvixi wbKvn w`‡Z cvi‡e bv Ges †Kvb bvix wb‡Ri wbKvn (Ijx Qvov) wb‡Ri `vwq‡Z¡ m¤úv`b Ki‡Z cvi‡e bv|** (AviI t `vivKzZbx, mnxn)



227 তিরমিযী রেওয়ায়েত করেছেন ........... রসূলুল্লাহ (স.) বলেন, “যে নারী নিজে নিজের বিবাহ সম্পন্ন করবে তার বিবাহ বাতিল বাতিল বাতিল। অভিভাবকরা যদি ঐ নারীর বিবাহে বাধা সৃষ্টি করে, তবে যার ওলী নেই সুলতান বা শাসক তার ওলী বা অভিভাবক হবে। (আহমাদ, তিরমিযী, আবু দাউদ, ইবনে মাজাহ)



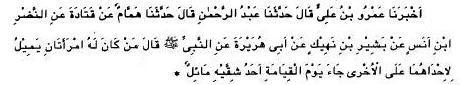
228 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. GK`v Avwqkvn (ivt) bex (mvt) †K ej‡jb, †n Avjøvni im~j! kv`xi Rb¨ K‡bi G‡Rb hiæix wK? wZwb (mvt) ej‡jb,Ò**n¨v Riæix**|Ó Avwqkvn (iv.) ej‡jb, †g‡qiv †Zv ki‡g Lv‡gvk \_v‡K| bex (mvt) ej‡jb, Ò**Zvi Lv‡gvk \_vKvB G‡Rb**|Ó (AviI t mnxn gymwjg)



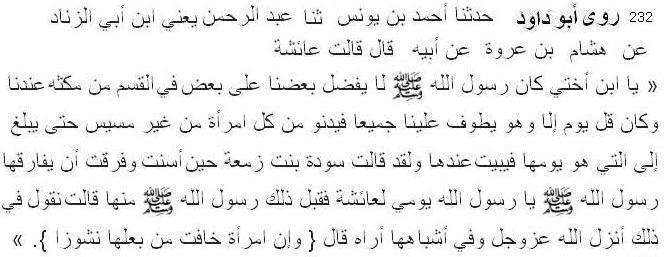
229 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Lvbmv web‡Z wL`vg (iv.) †\_‡K ewY©Z, Zvi wcZv Zv‡K weaev nIqvi ci GK †jv‡Ki mv‡\_ wbKvn w`‡j wZwb Zv AcQ›` K‡ib Ges im~jyjøvn (m.) †K Rvbvb| im~jyjøvn (m.) H wbKvn †f‡½ †`b| (AviI t Avey `vD`, bvQvqx) | [[16]](#footnote-16)



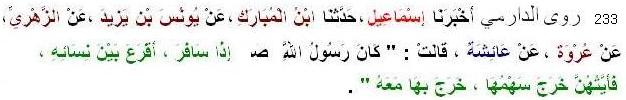
230 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. gvngy` Be‡b jvex` (ivt) e‡jb, im~jyjøvn (m.)‡K Rvbv‡bv n‡jv †h, GK e¨w³ Zvi wewe‡K GK‡Î wZb ZvjvK w`‡q‡Q| wZwb †Mvm¨v n‡q `vuov‡jb Ges ej‡jb, Ò**Avwg †Zvgv‡`i gv‡S \_vK‡ZB wK †m Avjøvni wKZve wb‡q †Ljv Ki‡Q**?Ó (Bgvg Avng` mnxn e‡j‡Qb)



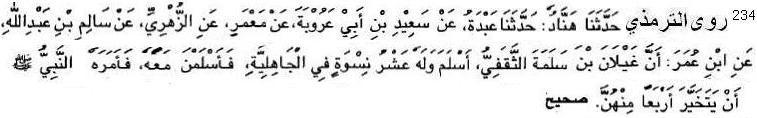
231 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey ûivqiv (ivt) †\_‡K, bex (m:) e‡jb, Ò**hvi `yBRb wewe Av‡Q †m Zv‡`i g‡a¨ mgZv iÿv bv Ki‡j wKqvgZ w`e‡m Zvi †`‡ni GK cvk fv½v Ae¯’vq nvwhi n‡e**|Ó (AviI t wZiwghx; mnxn)



232 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkvn (ivt) e‡jb, Avjøvni im~j (mvt) mKj weweM‡Yi g‡a¨ mgfv‡e (mgq) e›Ub Ki‡Zb| (AviI t bvQvqx, Be‡b wneŸvb; mnxn)



233 **`v‡igx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkvn (ivt) e‡jb, Avjøvni im~j (mvt) hLb md‡i †h‡Zb ZLb wewe‡`i bv‡g jUvix Ki‡Zb| G‡Z hvi bvg †c‡Zb Zv‡K wb‡q md‡i †h‡Zb| (AviI t mnxn eyLvix, gymwjg)



234 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b Dgi (iv.) †\_‡K, Mvqjvb hLb Bmjvg Keyj K‡ib, ZLb Zvi `kRb wewe wQj| Zviv mevB Zvi mv‡\_ Bmjvg Keyj K‡ib| bex (m:) Zv‡K Zv‡`i ga¨ †\_‡K PviRb‡K cQ›` K‡i ivL‡Z ûKzg w`‡jb| (AviI t Avng`, Be‡b wneŸvb, nvwKg; Be‡b wneŸvb, eyLvix I nvwKg nv`xmwU‡K mnxn e‡j‡Qb|)



235 বুখারী রেওয়ায়েত করেছেন .............. আলী (রা.) থেকে; আল্লাহর রসূল (স.) খায়বারের যুদ্ধের সময় অস্থায়ী নিকাহ (মুতা) নিষেধ করেছেন এবং গৃহপালিত গাধা খেতে নিষেধ করেছেন। (আরও: তিরমিযী)

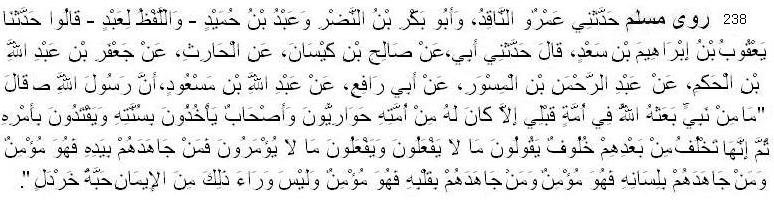


236 Avng` †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. AvQgv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**Zzwg †f‡e †`L Zzwg †Zvgvi ¯^vgxi gva¨‡g †Kv\_vq hv‡e? †m †Zvgvi RvbœvZ I Rvnvbœvg|Ó** (mnxn)

**gvbevwaKvi**



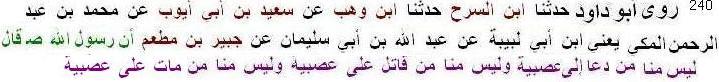
237 আহমদ রেওয়ায়েত করেছেন .............. আবু নাযরা থেকে, তিনি এমন একজন (সাহাবী) থেকে যিনি রসূল (স.)-এর খুতবা শুনেছেন। রসূল (স.) বলেছেন, তোমাদের রব এক, তোমাদের পিতা এক। অবশ্যই অনারবের উপরে আরবের কোন প্রাধান্য নেই**,** আরবের উপরেও অনারবের কোন প্রাধান্য নেই, কালোর উপর লালের কোন প্রাধান্য নেই, লালের উপর কালোর কোন প্রাধান্য নেই, তাকওয়া ব্যতীত। (সহীহ)



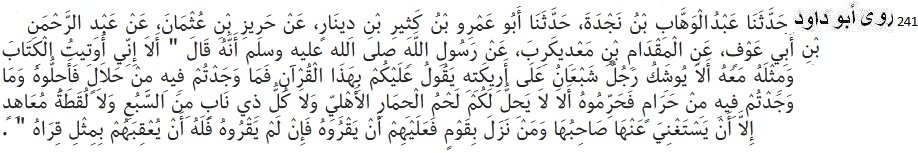
238 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey mvB` (iv.) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**†h e¨w³ †Zvgv‡`i g‡a¨ KvD‡K Ab¨vq Ki‡Z ‡`L‡e †m †hb Zv nvZ Øviv †VKvq| hw` Zv bv cv‡i, Zvn‡j †hb gyL Øviv e‡j| hw` Zv bv cv‡i Z‡e AšÍi Øviv (†KivnvZ) K‡i| Avi †klUv `~e©jZg Cgvb**|Ó (mnxn)



239 **mvB` web gvbm~i** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. GKevi wRnv‡` wM‡q mvnvexMY iv¯Ívi Dci e‡m c‡ob| ZLb im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**†h e¨w³ A‡b¨i Rb¨ Ae¯’vb msKxY© K‡i wKsev Pjvi c\_ eÜ K‡i Zvi Rb¨ †Kvb wRnv` (wRnv‡`i mIqve) †bB**|Ó (AviI t Avey `vD`) [[17]](#footnote-17)



240 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. hyev‡qi Be‡b gyZCg (iv.) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**†h e¨w³ †jvK‡`i‡K Avmvweqv‡Zi w`‡K Wv‡K, wb‡RI Avmvweqv‡Zi mg\_©‡b hy× K‡i Ges Avmvweqv‡Zi mg\_©‡b g„Zz¨eiY K‡i, †m e¨w³ Avgvi `‡ji bq**|Ó GK mvnvex mIqvj Ki‡jb, ÒAvmvweqvZ wK?Ó im~jyjøvn (m.) ej‡jb, Ò**Ab¨vqKv‡R †Zvgvi wbR ‡Mv‡Îi mvnvh¨ Kiv**Ó| [[18]](#footnote-18)



241 আবু দাউদ রেওয়ায়েত করেছেন ........... মিকদাম ইবন মা'দীকরাব (রা.) থেকে; রসূলুল্লাহ (স.) বলেছেনঃ জেনে রাখ! আমাকে কুরআন দেয়া হয়েছে এবং এর সাথে অনুরূপ (হাদীছ) দেয়া হয়েছ। অদূর ভবিষ্যতে একজন অভাবহীন তৃপ্ত ব্যক্তি তার খাটের উপর অবস্থান করে বলবেঃ তোমরা এ কুরআনকে গ্রহণ কর এবং এতে যা হালাল বলা হয়েছে, তা হালাল হিসাবে গ্রহণ কর; আর যা হারাম বলা হয়েছে তা হারাম হিসাবে গ্রহণ কর। জেনে রাখ! গৃহ-পালিত গাধার গোশত তোমাদের জন্য হালাল নয়, কোন হিংস্র জন্তুর গোশতও হালাল নয়, কোন যিম্মীর (শান্তিচুক্তিতে আবদ্ধ অমুসলিম) হারানো (বা পরিত্যক্ত) মাল হালাল নয়, তবে যদি তার মালিক তা থেকে বে-পরওয়া হয়, সে আলাদা ব্যাপার। আর যদি কেউ মেহমান হিসারে কোন কওমের কাছে যায়, তবে তাদের উচিত তার মেহমানদারী করা। তারা যদি সে ব্যক্তি মেহমানদারী না করে, তবে তাদের কাছ থেকে মেহমানের হক গ্রহণ করার অধিকার তার থাকবে।

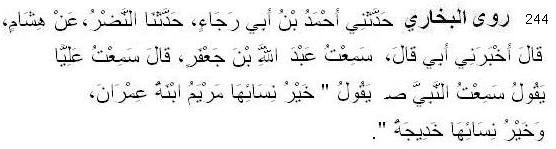
**mvnvex‡`i gh©v`v**



242 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avjx (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**Avjøvn e`i hy‡×i †hv×v‡`i mvg‡b G‡m‡Qb Ges e‡j‡Qb, †Zvgiv hv B”Qv Avgj Ki, Avwg †Zvgv‡`i‡K gvd K‡i w`‡qwQ**|Ó

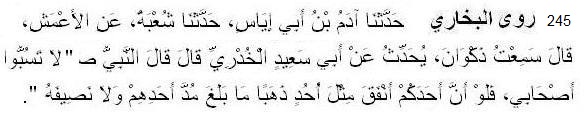


243 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb ............. D‡¤§ gyevkwki (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**Bb kv Avjøvn (ny`vqweqvq) Mv‡Qi Z‡j evBqvZKvix‡`i g‡a¨ GKRbI Rvnvbœv‡g `vwLj n‡e bv**|Ó



244 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avjx (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**RM‡Zi bvix‡`i †miv gvwiqvg web‡Z Bgivb I Lv`xRvn**|Ó (mnxn)

**Aegvbbvwe‡ivax (Antidefamation) wb‡`©kbv**

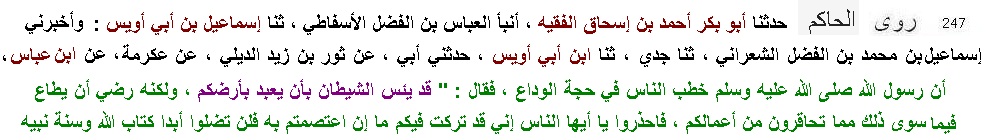


245 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey mvB` (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Òআমার সাহাবীদের সমালোচনা করবে না। যদি তোমাদের কেউ উহুদ পরিমাণ সোনা খরচ করে তবে তাদের এক মুদ খরচ করার কাছে পৌছতে পারবে না। Ó (AviI t, gymwjg) [[19]](#footnote-19)



246 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avãyjøvn web gyMvddvj (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Ò**Avjøvn‡K fq Ki, Avjøvn‡K fq Ki Avgvi mvnvex‡`i e¨vcv‡i| Avgvi c‡i Zuv‡`i‡K †`vlv‡iv‡ci jÿ¨ evbvBI bv**|Ó (QzqyZx Rv‡g mMx‡i nvmvb e‡j‡Qb)

**mybœZ I we`AvZ**



247 **nvwKg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b AveŸvQ (iv.) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, **†Zvgv‡`i g‡a¨ `yBwU welq ZiK K‡i hvw”Q †Zvgiv KL‡bv c\_nviv n‡e bv †h ch©šÍ †Zvgiv G `y‡Uv‡K AuvK‡o a‡i \_vK - Avjøvni wKZve I Zvi bexi mybœZ|** (AviI t gyqvËv gvwjK; nvmvb nv`xm)



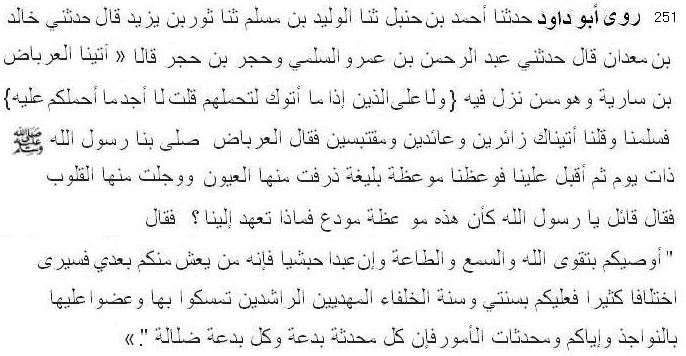
248 **Zvevivbx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey hi (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Ò**hv wKQz RvbœvZ‡K Kv‡Q Av‡b Ges hv wKQz Rvnvbœvg‡K `~‡i †V‡j Zvi meB †Zvgv‡`i‡K eqvb Kiv n‡q‡Q wKQzB evKx ivLv nq wb**|Ó (AviI t nvwKg, gvKw`mx, nvqQvgx; mnxn)



249 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey nyivqiv (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: **†h Ggb Avgj K‡i hvi Rb¨ Avgv‡`i wb‡`©k †bB Zv cÖZ¨vL¨vZ|**Ó(AviI t gymwjg; mnxn) [[20]](#footnote-20)

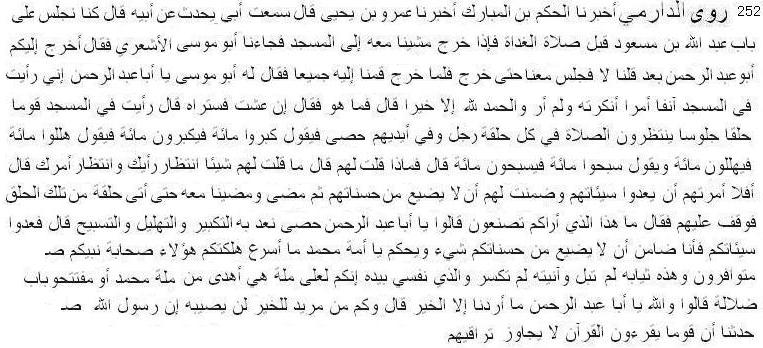


250 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkv (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**†h Avgv‡`i kixqv‡Z bZzb wKQz Pvjy Ki‡e hv Zv‡Z †bB Z‡e Zv cÖZ¨vL¨vZ**|Ó (AviI t eyLvix, gymwjg, Avey `vD`)

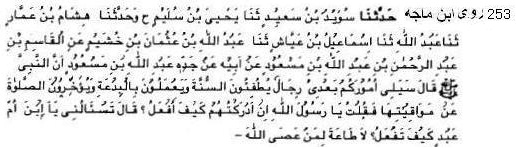


251 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Bievh web Qvwiq¨v (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**Avwg †Zvgv‡`i‡K ImxqZ KiwQ †h †Zvgiv Avjjvn‡K fq Ki‡e Ges Avgxi‡K ïb‡e I gvb‡e hw`I †m nvekx †Mvjvg nq| †Zvgiv a‡g©i g‡a¨ cÖ‡Z¨K bZzb D™¢veb †eu‡P \_vK| KviY cÖ‡Z¨K bZzb ms‡hvRb we`ÔAvZ Ges cÖ‡Z¨K we`ÔAvZ åóZv**|Ó

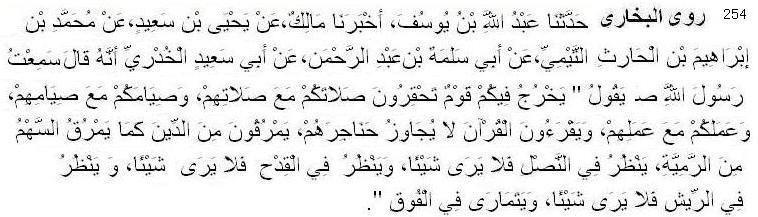
(bvQvqx................. ÒcÖ‡Z¨K we`ÔAvZ åóZv Ges cÖ‡Z¨K åóZvB Av¸‡b hv‡e|Ó)



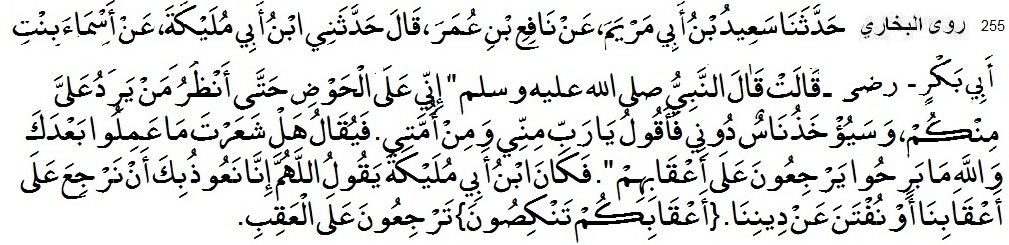
252 দারেমী রেওয়ায়েত করেছেন .......... আবু মূসা রা. ইবনে মাছউদ রা.-কে বললেন, আমি মসজিদে কিছু কাজ দেখলাম যা আমার কাছে অপরিচিত। আমার কাছে ভালো মনে হয়েছে। আমি দেখলাম কিছু লোক গোল হয়ে বসে সালাতের আগে অপেক্ষা করছে। প্রত্যেক হালকায় একজন করে লোক আছে; আর তাদের কাছে আছে গণনার পাথর, সে বলছে একশ’ বার তাকবীর বল, তারা তাকবীর বলছে। সে বলছে একশ’ বার তাহলীল বল, তারা তাহলীল বলছে। তারা সে বলছে একশ’ বার তাসবীহ বল, তারা তাসবীহ বলছে। ইবনে মাছউদ বললেন, আপনি তাদেরকে কী বলেছেন? আবু মূসা বললেন, আমি তাদেরকে কিছু বলি নি। আমি আপনার রায় এবং আপনার নির্দেশের জন্য অপেক্ষা করছি। ইবনে মাছউদ মসজিদে এসে কাজ একটি হালকার কাছে গেলেন; বললেন, এটা কী উদ্ভাবন করেছ যা আমি তোমাদেরকে করতে দেখছি? তারা বলল, হে আব্দুর রহমানের বাবা, আমরা তাকবীর, তাহলীল ও তাসবীহ গণনা করছি। ইবনে মাছউদ বললেন, তোমরা তোমাদের গুনাহ গণনা করে রাখ। আমি তো যিম্মাদার যেন তোমরা সৎকাজ নষ্ট না কর। হে মুহম্মদ স.-এর উম্মত, তোমরা এত শীগগির হালাক হলে, যখন তোমাদের মধ্যে তোমাদের নবীর এই সাহাবীগণ আছেন? তার কাপড় এখনও জীর্ণ হয়নি। তার প্লেট এখনও ভাঙ্গে নি। তোমরা কি নবী স.-এর মিল্লাতের চেয়ে ভালো মিল্লাত পেয়েছ না কি গোমরাহীর দরজা খুলেছ? তারা বলল, আমরা ভালো মনে করেই একাজ করেছি। ইবনে মাছউদ বললেন, কল্যাণের আশাবাদী কত লোক কল্যাণ পায় না। নবী স. বলেছেন, **একটি কওম কুরআন পড়বে কিন্তু কুরআন তাদের গলার নীচে নামবে না**। [[21]](#footnote-21)



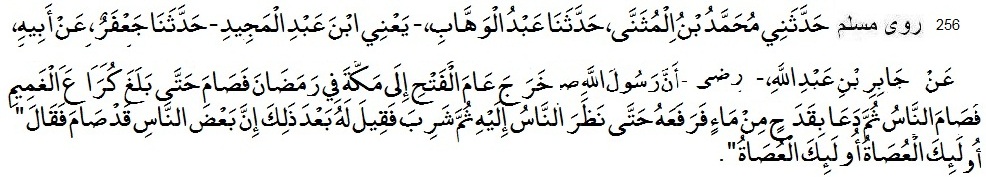
253 ইবনে মাজাহ রেওয়ায়েত করেছেন .......... ইবনে মাছউদ রা. থেকে, রসূল স. বলেন, অচিরেই একদল লোক বিদআতে লিপ্ত হবে। বলা হল, আমরা কী করব? রসূল স. বললেন, “**আল্লাহর অবাধ্যতা যে করবে তার আনুগত্য চলবে না**।”



254 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey mvC` Ly`ix (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Ò**GB D¤§‡Zi g‡a¨B Ggb GK`j †jvK †ei n‡e †Zvgv‡`i †KD †Zvgv‡`i mvjvZ‡K Zv‡`i mvjv‡Zi Kv‡Q Zy”Q g‡b Ki‡e, †Zvgv‡`i mIg‡K Zv‡`i mI‡gi Kv‡Q Zy”Q g‡b Ki‡e|** - - - - - **Zviv gymwjg‡`i‡K nZ¨v Ki‡e** - - - - - -Ó (AviI t gymwjg; mnxn) [[22]](#footnote-22)

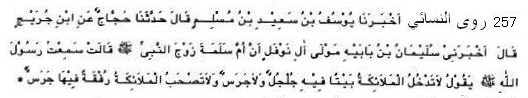


255 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. AvQgv web‡Z Avey eKi (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**Avwg nvI‡h [KvIQv‡i] \_vKe| Avwg †`Le †Zvgv‡`i KZK‡K Avgvi Kv‡Q Avbv n‡”Q Avi KZK‡K Avgv †\_‡K `~‡i nwU‡q †`qv n‡”Q| Avwg eje, †n Avgvi cvjbKZ©v, Giv Avgvi †jvK, Giv Avgvi D¤§‡Zi †jvK| ejv n‡e: Avcwb wK Rv‡bb Avcbvi c‡i Zviv Kx K‡i‡Q? Avjøvni kc\_, Zv‡`i‡K †h c\_ †`Lv‡bv n‡qwQj Zv †\_‡K Zviv wegyL n‡qwQj**|Ó(mnxn) [[23]](#footnote-23)

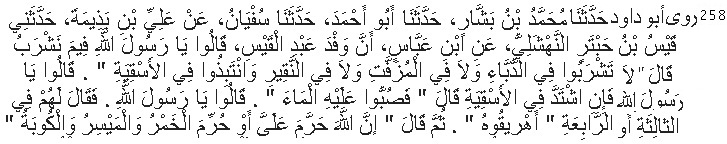


256 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Rvwei (iv:) †\_‡K ewY©Z, dZ‡n g°vi eQi bex (m.) g°vi w`‡K iIqvbv n‡q Mvbxg bvgK RvqMvq G‡jb| wZwb I Zvi mv\_xiv mIgiZ wQ‡jb| Zv‡K ejv n‡jv wKQz †jv‡Ki Rb¨ mIg ivLv KóKi n‡q c‡o‡Q| Zviv Avcbvi A‡cÿvq Av‡Q Avcwb Kx K‡ib| bex (m.) Avm‡ii mvjv‡Zi ci cvwbi cvÎ Avb‡Z ej‡jb| wZwb cvwb cvb Ki‡jb| Zv‡K ejv n‡jv A‡b‡K mIg fvs‡M wb| wZwb ej‡jb, Ò**Iiv bvdigvb, Iiv bvdigvb|Ó** (mnxn)

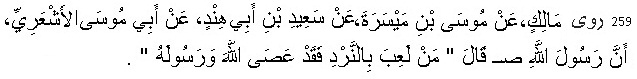
**ev`¨hš¿ I †Ljv**



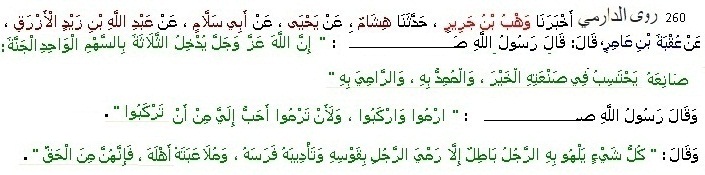
257 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. D‡¤§ mvjvgv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**†d‡ikZv H Kv‡djvi mv‡\_ \_v‡K bv hv‡`i g‡a¨ NÈv \_v‡K|Ó**



258 আবু দাউদ রেওয়ায়েত করেছেন .... ইবন আব্বাস (রা.) থেকে; আবদুল কায়স গোত্রের লোকরা জিজ্ঞাসা করেছিলঃ হে রসূলুল্লাহ! আমরা কোন পাত্রে পান করবো? তিনি বলেনঃ তোমরা কদুর খোলে তৈরী পাত্রে, শীশার তৈরী পাত্রে এবং কাঠের তৈরী পাত্রে পান করবে না। বরং তোমরা মশকের মধ্যে নাবীয ভিজিয়ে রাখবে। তখন তাঁরা জিজ্ঞাসা করেন, হে রসূলুল্লাহ! মশকের মধ্যে ভিজিয়ে রাখার কারণে যদি নাবীযের তীব্রতা বৃদ্ধি পায়? তিনি (স.) বলেন, তবে তাতে আরো পানি মিশাবে। পরে তাঁরা আবার এরূপ জিজ্ঞাসা করলে তিনি তাদের তৃতীয় অথবা চতুর্থবারের জিজ্ঞাসার জবাবে বলেনঃ এমতাবস্থায় তোমরা নাবীয ঢেলে ফেলে দেবে। **আল্লাহ হারাম করেছেন মদ, জুয়া ও তবলা (কুবা)**। এরপর বলেন, সব ধরনের নেশা সৃষ্টিকারী বস্তুই হারাম। (আরও আহমদ, সহীহ)



259 মালিক রেওয়ায়েত করেছেন ...... আবু মুসা (রা.) থেকে রসূল (স.) বলেন, “যে পাশা(dice) খেলল সে আল্লাহ ও তার রসূলের বিরোধিতা করল। (আরও: আহমদ, ইবনে মাজাহ; হাসান)

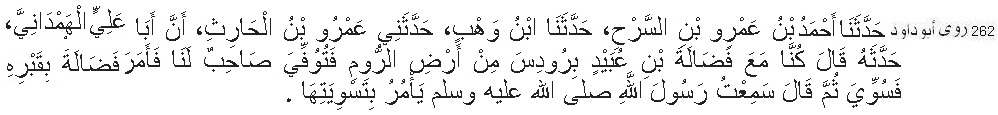


260 দারেমী রেওয়ায়েত করেছেন ......... উকবা বিন আমির থেকে, **একটি তীরের কারণে আল্লাহ তিনজনকে জান্নাতে দাখিল করবেন। এর তৈয়ারকারী, যে সৎ উদ্দেশ্যে তা তৈয়ার করে, যে তীর নিক্ষেপে সহায়তা করে এবং যে তীর নিক্ষেপ করে**।” আর তিনি বলেন, “**পুরুষলোক যা দিয়ে খেলে তার সবই বাতিল তবে ব্যতিক্রম যে কোন পুরুষ তার ধনুক থেকে তীর নিক্ষেপ করে, তার ঘোড়াকে প্রশিক্ষণ দেয়, আর তার বিবির সাথে খেলে। এগুলি যথার্থ**।” (আরও: আহমদ, হাকিম, আবু দাউদ 2505, )

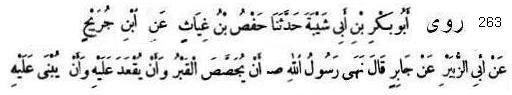


261 **Zvevivbx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. mvnj web QvÕ` (iv.) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, **Avgvi D¤§‡Z f~wgK¤ú I weK…wZ n‡e| hLb ev`¨hš¿ e¨envi I MvwqKv evo‡e Ges g`‡K wKQy †jvK nvjvj e‡j `vwe Ki‡e**|

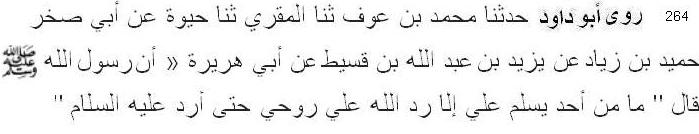
**Kei, Qwe I g~wZ©**



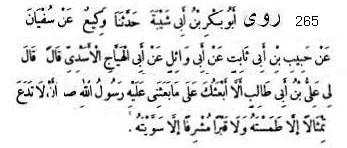
262 আবু দাউদ রেওয়ায়েত করেছেন ........ আবূ আলী হামদানী থেকে; তিনি বলেন, আমরা ফুযালা (রা.)-এর সঙ্গে রোম দেশের রোডস নামক স্থানে ছিলাম। সেখানে আমাদের একজন সাথী ইনতিকাল করেন। তখন ফুযালার নির্দেশে সে ব্যক্তির কবর মাটির সমান করে দেওয়া হয়। এরপর তিনি বলেন, আমি রসূলুল্লাহ (স.)-কে কবর সমান করে দেওয়ার হুকুম দিতে শুনেছি। (সহীহ)



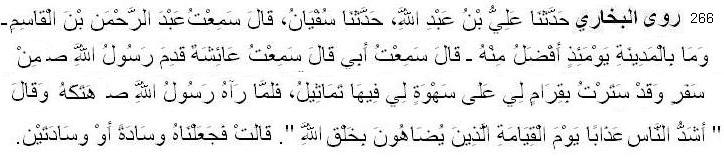
263 ইবনে আবু শায়বা রেওয়ায়েত করেছেন ......... জাবির (রা.) থেকে; তিনি বলেন, আমি শুনেছি যে, নবী (স.) কবর পাকা করতে কবরের উপর বসতে এবং কবরের উপর সৌধ নির্মাণ করতে নিষেধ করেছেন। (আরও: মুসলিম, আবু দাউদ, নাছায়ী)



264 আবু দাউদ রেওয়ায়েত করেছেন ........ Avey ûivqiv (iv:) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡j‡Qb, Ò**hLb †KD Avgv‡K mvjvg Rvbv‡e Avjøvn Avgvi iƒn‡K †diZ †`‡eb hv‡Z Avwg RIqve w`‡Z cvwi**|Ó (Avey `vD` nv. 2041; nvmvb)

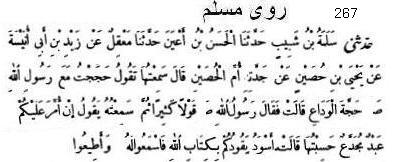


265 ইবনে আবু শায়বা রেওয়ায়েত করেছেন ........... আবূ হায়্যাজ আসদী (রা.) থেকে; তিনি বলেন, একদা আলী (রা.) আমাকে পাঠান এবং বলেন, আমি কি তোমাকে এমন একটি কাজের জন্য প্রেরণ করবো যে কাজের জন্য আমাকে রাসূলুল্লাহ (স.) পাঠান (তা হলো:) আমি যেন কোন উঁচু কবর সমান করা ছাড়া এবং কোন মূর্তি ভেঙ্গে যমীনের সাথে মিশিয়ে দেওয়া ছাড়া, নিবৃত্ত না হই। (আরও মুসলিম, আবু দাউদ)



266 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkv (iv.) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**Avjøvni Kv‡Q me‡P‡q KwVb Avhv‡ei m¤§yLxb n‡e Qwe ‰ZqviKvixiv**|Ó (AviI t gymwjg; mnxn)

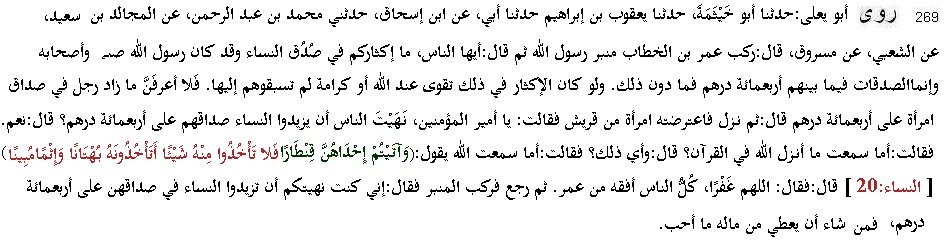
**kvmb I wePvi**



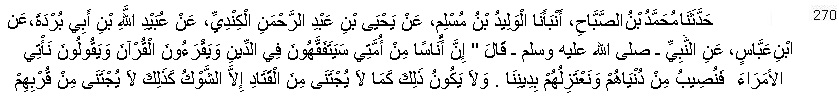
267 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. D¤§yj ûmv‡qb (iv:) †\_‡K, imyjyjøvn (m.) e‡jb, Ò**hw`** †**Zvgv‡`i Dci bvKKvUv Kv‡jv †Mvjvg‡K kvmK wbhy³ Kiv nq †h †Zvgv‡`i‡K Avjøvni wKZve gvwdK cwiPvjbv K‡i †Zvgiv Zv‡K †kvb Ges gv‡bv**|Ó



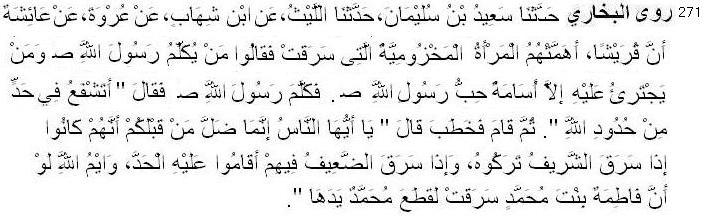
268 বুখারী রেওয়ায়েত করেছেন ..... আবু মুসা হতে, তিনি বলেন যে, আমি ও আমার কওমের দু'ব্যাক্তি নবী (স.) এর নিকট আসলাম| সে দুজনের একজন বলল, হে আল্লাহর রাসুল, আমাকে আমীর নিযুক্ত করুন| অন্যজনও ঐরুপ কথা বলল| তখন তিনি বললেনঃ যারা নেতৃ্ত্ব চায় এবং লোভ করে, আমরা তাদেরকে এ পদে নিয়োগ করিনা” (আরও: মুসলিম)



269 আবু ইয়ালা রেওয়ায়েত করেছেন .. . . . মছরূক থেকে, উমার বললেন, হে মানুষ, আল্লাহর রসূল ও তার সাহাবীদের মোহর চারশত দিরহাম বা তার কম হত। অতএব এর বেশি কেউ মোহর নির্ধারণ করবে না। এক কুরাইশ নারী এসে বললেন, হে ঈমানদারদের আমীর, আপনি চারশত দিরহামের বেশি মোহর নির্ধারণ করতে নিষেধ করছেন? তিনি বললেন, হা। নারী বললেন, আল্লাহ কুরআনে কী নাযিল করেছেন তা শোনেন নি? তিনি বললেন, সেটা কী? নারী বললেন, আল্লাহ বলেছেন, যদি তোমরা তাদের একজনকে অগাধ সম্পদও দিয়ে থাক, তবুও তা থেকে কিছুই ফিরিয়ে নিও না(4:20)। উমার বললেন, হে আল্লাহ, মাফ করুন, সব লোক উমারের চেয়ে বেশি জানে। তিনি মিম্বরে উঠলেন ও বললেন, আমি চারশত দিরহামের বেশি মোহর নির্ধারণ করতে নিষেধ করেছিলাম। এখন কেউ যা পছন্দ করে দিতে পারবে। [[24]](#footnote-24)



270 ইবনে মাজাহ রেওয়ায়েত করেছেন ... .. ইবনে আব্বাস থেকে, তিনি বলেন, “রসুল (স.) বলেছেন, অচিরেই আমার উম্মতের মাঝে কিছু সংখ্যক লোক দীনের গভীর জ্ঞান অর্জন করবে এবং কুরআন পড়বে। তারা বলবে, ‘আমরা আমীরদের কাছে যাব, তাদের পার্থিব ভাগ নিব এবং আমরা নিজেদের দীনকে অক্ষুন্ন রেখেই তাদের হতে সরে পড়ব।’ কিন্তু তা সম্ভব নয়। যেমন কাঁটাযুক্ত কাতাদ গাছ থেকে কাঁটা ব্যতীত কোন ফল লাভ করা যায় না, তেমনি এদের নিকট থেকেও কোন ফল লাভ করা যায় না।” (যঈফ)

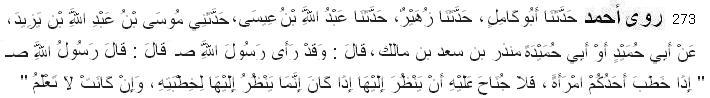


271 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkvn (iv:) †\_‡K, imyj (m.) e‡jb, Ò**†Zvgv‡`i Av‡Mi hviv aŸsm n‡q‡Q Zv‡`i g‡a¨ †Kvb kixd †jvK Pzwi Ki‡j Zviv Zv‡K †Q‡o w`Z| Avi `wi`ª †jvK Pzwi Ki‡j Zvi nvZ KvUZ| Avjøvni kc\_, hw` gyn¤§‡`i †eUx dvwZgvI Pzwi KiZ Avwg Zvi nvZ KvUvi Av‡`k w`Zvg|**

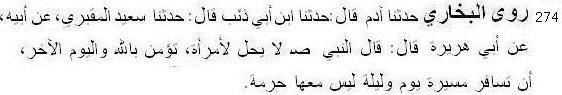


272 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b Avgi (iv:) †\_‡K, imyjyjøvn (m.) e‡jb, Ò**†eZ, jvwV BZ¨vw`i AvNv‡Z †h nZ¨v N‡U hv B”QvK…Z g‡b n‡Z cv‡i Zvi w`qvZ GKkZ DU, Gi PwjøkwU Mf©eZx n‡Z n‡e|** (AviI t bvQvqx) [[25]](#footnote-25)

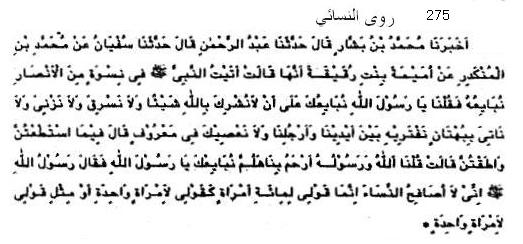
**c`©v**



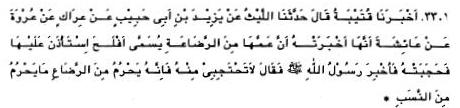
273 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey †nvgvB` gybwhi (iv:) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**†KD wbKvn Kivi D‡Ï‡k¨ hw` †Kvb bvix‡K ‡`‡L Z‡e Zvi †Kvb ¸bvn n‡e bv|**Ó (mnxn)  [[26]](#footnote-26)



274 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey ûivqiv (iv:) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**‡Kvb gvnivg AvZ¥xq Qvov GKvKx †Kvb bvix †hb GKw`b I GK iv‡Zi `~iZ¡I AwZµg bv K‡i**|Ó (AviI t gymwjg, wZiwghx; mnxn)

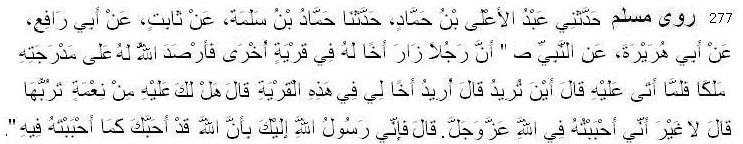


275 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. DgvBgv web‡Z iæKvBqvKv (iv:) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**Avwg gwnjv‡`i mv‡\_ gymvdvnv Kwi bv**|Ó (AviI t gvwjK, Avng`, Be‡b wneŸvb, wZiwghx; mnxn)



276 **bvQvqx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkvn (ivt) Zuvi fv‡Mœ DiIqv‡K GB Lei †`b †h, Zuvi `ya-PvPv (`ya-gv‡qi fvïi) hvi bvg Avdjvn Zuvi Kv‡Q Avm‡Z PvB‡j wZwb Zvi †\_‡K c`©v K‡ib| Avjøvni im~j (m.) †K G Lei †`qv nq| wZwb e‡jb, Ò**Zvi †\_‡K c`©v K‡iv bv| †Kbbv `yacvb m¤ú‡K© Hme †jvK nvivg nq, eskMZ m~‡Î hviv nvivg nq**|Ó

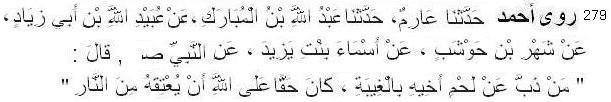
**eÜzZ¡ I m¤úK©‡”Q`**



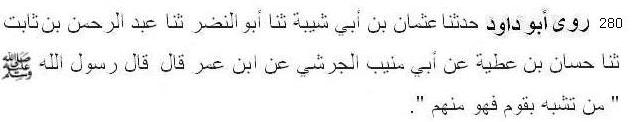
277 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey ûivqiv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡j‡Qb: Ò**†Kvb e¨w³ Ab¨ Rbc‡` Zvi fvB‡qi mv‡\_ mvÿvr Ki‡Z †M‡j Avjøvn Zvi Mgb c‡\_ GKRb †d‡ikZv ewm‡q w`‡jb| hLb †jvKwU †d‡ikZvi Kv‡Q †cŠQj, ZLb †m ejj, Zzwg †Kv\_vq hv”Q? †m ejj GB MÖv‡g Avgvi fvB‡qi mv‡\_ mvÿv‡Zi Rb¨ hvw”Q| †d‡ikZv ejj, Zvi Kv‡Q wK †Zvgvi †Kvb m¤ú` cvIbv Av‡Q hv Zzwg †`Lvïbv Ki ? †jvKwU ejj, bv, †md© Avjøvni mš‘wói D‡Ï‡k¨B Avwg Zv‡K gneŸZ Kwi| †d‡ikZv ejj, Avwg †Zvgvi Kv‡Q Avjøvni `~Z, Avjøvn †Zvgv‡K †Zgb gneŸZ K‡ib †hgb Zzwg Zv‡K Avjøvni mš‘wói D‡Ï‡k¨ gneŸZ Ki**|Ó



278 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Rvwei (iv:) †\_‡K, im~j (m.) e‡jb, Ò**†Zvgiv gymwjg‡`i Kj¨vY Kvgbv Ki‡e Ges gykwiK‡`i mv‡\_ m¤úK© wQbœ Ki‡e**|Ó (AviI t evqnvKx, Zvevivbxi gyRvg mMxi; mnxn)



279 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. AvQgv web‡Z Bqvhx` (iv:) †\_‡K, Avjøvni im~j (m.) e‡jb, Ò**†h Zvi fvB‡qi Mi-nvwhivq Zvi m¤§vbnvwbKi welq‡K nwU‡q †`‡e Avjøvn wKqvgZ w`e‡m Zvi †Pnviv †\_‡K Av¸b‡K nwU‡q ‡`‡eb**|Ó (mb` nvmvb, nv`xm mnxn †`Lyb: Mvqvn Avj gvivg -431)

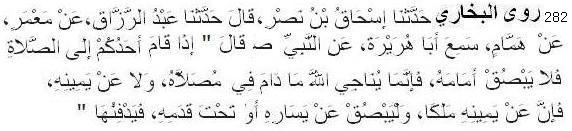


280 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b Dgi (iv:) †\_‡K, im~jyjøvn (m.) e‡jb, Ò**†h ‡jvK †Kvb KI‡gi mv`„k¨ GLwZqvi Ki‡e †m Zv‡`iB g‡a¨ kvwgj n‡e|Ó** (mnxn)

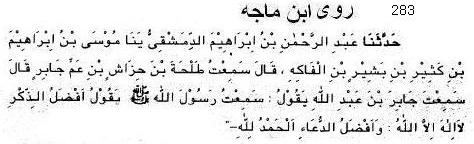


281 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b Dgi (iv:) †\_‡K, im~j (m.) e‡jb, Ò**†Zvgiv †Mvud †QvU Ki‡e Ges `vwo j¤^v Ki‡e**|Ó (AviI t bvQvqx)

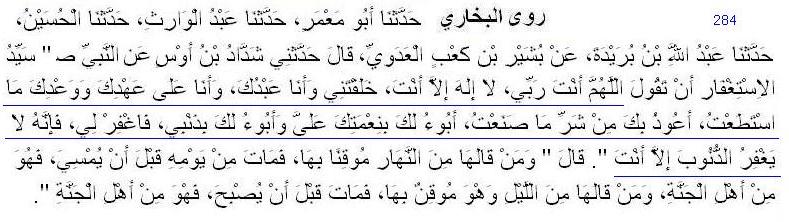
**†`vqv I whwKi**



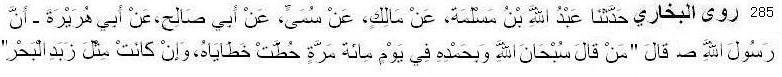
282 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb......... Avey ûivqiv (ivt) †\_‡K, bex (mt) e‡jb, **hLb †Zvgv‡`i †KD mvjv‡Z `vuovq †m †hb Zvi \_yZz mvg‡b bv †d‡j| KviY ev›`v Zvi cvjbKZ©vi mv‡\_ gybvRv‡Z gk¸j \_v‡K hZÿY †m mvjv‡Zi RvqMvq `vwuo‡q \_v‡K| Wvb w`‡KI †dj‡e bv KviY †mLv‡b †d‡ikZv \_v‡K| ev‡g A\_ev wb‡Pi w`‡K †dj‡e|** (AviI gymvbœvd Ave`yi ivhhvK)



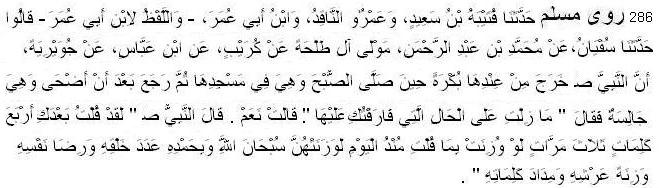
283 **Be‡b gvRvn** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Rvwei web Avãyjøvn (iv:) †\_‡K, wZwb e‡jb, Avwg Avjøvni im~j (m.)†K ej‡Z ï‡bwQt **me‡P‡q dhxjZc~Y© wRwKi n‡”Q Ôjv- Bjvnv BjøvjøvnÕ Ges me‡P‡q dhxjZc~Y© †`vAv n‡”Q ÔAvjnvg`y wjjøvn**|Õ (AviI t wZiwghx, Be‡b wneŸvb)



284 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. kvÏv` Be‡b AvIm (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**mvwq¨`yj BmwZMdvi n‡”Q †h ev›`v ej‡e Avjøvny¤§v AvbZv ieŸx, LjvKZvbx Iqv Avbv Ave`yK&, Iqv Avbv ÔAvjv Avnw`Kv Iqv IqvÕw`Kv gvQZvZvÕZ&, AvDhyweKv wgb kviwi gv mbvÕZ&, Ave~DjvKv we wbÕgvwZKv ÔAvjvBqv Iqv Ave~DjvKv we hvgex, dvMwdijx, dv Bbœvny jv- BqvMwdiyh hyb~ev Bjøv Avb&Z&|Ó** (AviI t Avng`)



285 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey nyivqiv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**†h GKkZevi Qzenvbvjøvn Iqv wenvgw`nx e‡j Zvi Mybvnmg~n gvd Kiv nq hw`I Zv mgy‡`ªi †dbvivwki mgvb nq|Ó** (AviI t mnxn eyLvix, mnxn gymwjg, wZiwghx)



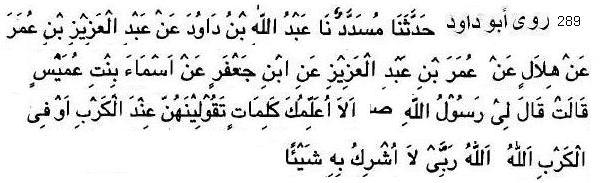
286 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. RyIqvqwiqv webZzj nvwiQ (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jb, Ò**Avwg †Zvgvi c‡i PviwU Kvwjgvn wZbevi e‡jwQ Zv †Zvgvi AvR‡Ki j¤^v mgq †`vqv Kivi ‡P‡q †ewk IRb`vi n‡e hw` IRb Kiv nq t Qzenvbvjøvn Iqv wenvgw`nx Av`v`v LjwKwn, Iqv wi`v bvdwQwn, Iqv whbvZv ÔAviwkwn Iqv wg`v`v KvwjgvwZwn|Ó**



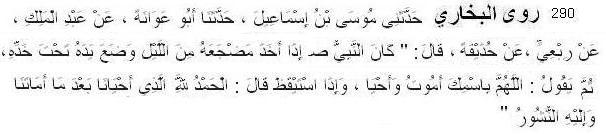
287 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. ZvwiK Avkhvqx (iv:) e‡jb, †KD Bmjvg Keyj Ki‡j Zv‡K mvjvZ †kLv‡bv n‡Zv| Gici Gme K\_v w`‡q †`vqv Kivi wb‡`©k †`qv n‡Zv t Ò**Avjøvû¤§vMwdijx Ihvinvgbx Iqvnw`bx Iqv Avwdbx IqvihyKbx|Ó**



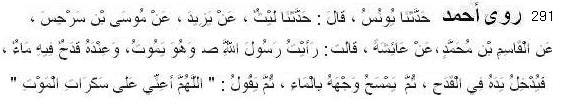
288 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. QvÕ` web Avey Iqv°vm (iv:) †\_‡K, Avjøvni im~j (m.) e‡jb, Ò**BDbym hLb gv‡Qi †c‡U wQ‡jb ZLb Zvi †`vqv wQj** - **Ôjv-Bjvnv Bjøv AvbZv, QzenvbvKv, Bbœx KzbZz wgbvh hvwjgxb| gymwjg e¨w³ †Kvb wel‡q G †`vqv Ki‡j Avjøvn Aek¨B Zvi RIqve w`‡eb**|Ó(mnxn)



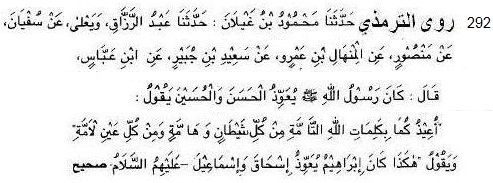
289 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. AvQgv web‡Z DgvBQ (iv:) †\_‡K, Avjøvni im~j (m.) e‡jb, Ò**Avwg wK - †Zvgv‡K Ggb Kv‡jgv wkLv‡ev bv hv Zzwg wec‡`i mgq ej‡e**? - **Avjøvû Avjøvû ieŸx jv-DkwiKy wewn kvBqv**|Ó(AviI t Be‡b gvRvn, bvQvqxi Avgvjyj BqvIwg Iqvj jvBjvn)



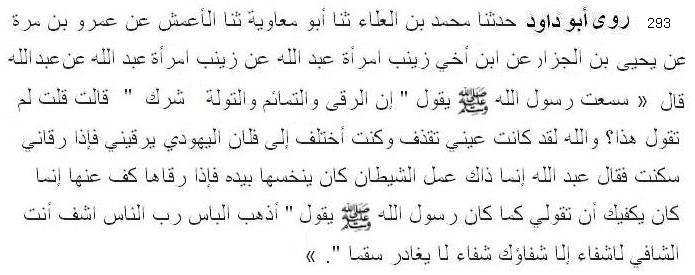
290 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. ûhvqdv Be‡b Bqvgvb (iv.) †\_‡K, hLb bex (m.) Nygv‡Z †h‡Zb ZLb ej‡Zb: **ÒAvjøvny¤§v wemwgKv AvgyZz Iqv AvnBqvÓ** Avi hLb Nyg †\_‡K DV‡ZbZLb ej‡Zb: **ÒAvj nvg`y wjjøvwnjjvhx AvnBqvbv evÕ`v gv AvgvZvbv Iqv BjvBwnb byïi|Ó**



291 **Avng`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkv (ivt) †\_‡K, bex (m.) e‡jb: Ò**Avjøvny¤§v AvBbbx Avjv QvKvivwZj gvIZÓ** †n Avjøvn! Avgv‡K gI‡Zi K‡ó mvnvh¨ Ki| (AviI t wZiwghx, Be‡b gvRvn; mnxn)



292 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b AveŸvQ (ivt) †\_‡K, bex (m.) nvmvb I ûmv‡q‡bi Rb¨ GB †`vqv Øviv Avkªq PvB‡Zb: Ò**DBhyKzgv we KvwjgvwZjøvwnZ Zv¤§vn wgb Kzwjø kvqZvwbI Iqv nv¤§vn Iqv wgb Kzwjø AvBwbj jv¤§vnÓ - Ò**Avjøvni c~Y© Kv‡jgvmg~‡ni gva¨‡g Avwg †Zvgv‡`i `yR‡bi Rb¨ Avkªq Pvw”Q ni kqZvb, ÿwZKi Rxe I e`bRi †\_‡K|Ó (mnxn)



293 আবু দাউদ রেওয়ায়েত করেন .... ইবন মাসউদের স্ত্রী যায়নাব থেকে; ইবন মাসউদ বলেন: “আমি রসূল (স.) কে বলতে শুনেছি যে ঝাড়ফুঁক, তাবিজ ও কবচ হচ্ছে শিরক।” আমি বললাম, ‘আপনি কেন একথা বললেন? আল্লাহর কসম, আমার চোখ দিয়ে অসুখের কারণে পানি ঝরছিল এবং আমি অমুক ইহুদীর কাছে গিয়েছিলাম, সে ঝাড়ফুঁক করতেই পানি পড়া বন্ধ হয়ে গেল।’ ইবন মাসউদ বললেন, ‘এটা শয়তানের কারসাজি ছিল, সে তার হাত দিয়ে তোমার চোখে খোঁচা দিচ্ছিল, ইহুদীটি মন্ত্র উচ্চারণ করতেই সে থেমে গেল। কারণ যখন তুমি তাকে মেনে নিচ্ছিলে সে থেমে যাচ্ছিল আর যখন তুমি তার অনুগত হচ্ছিলে না তখন সে খোঁচা দিচ্ছিল। তোমার যা বলা উচিত ছিল তা হচ্ছে এই দু’আ: ইযহাবিল বা’ছ, রাব্বান নাস, ওয়াশফি, আনতাশ শাফি’, লা শিফাআ ইল্লা শিফাউকা, শিফা’আল লা ইউগাদিরু সাকামান।’ [অর্থ: মন্দ দূর কর, হে মানবজাতির রব, এবং সুস্থতা দাও, তুমিই আরোগ্যদাতা। তোমার আরোগ্য ছাড়া কোন আরোগ্য নেই, এমন আরোগ্য যা রোগের কোন চিহ্ন রাখে না।] (আবু দাউদ ৩৮৮৩; ইবন মাজাহ ৩৫৩০)

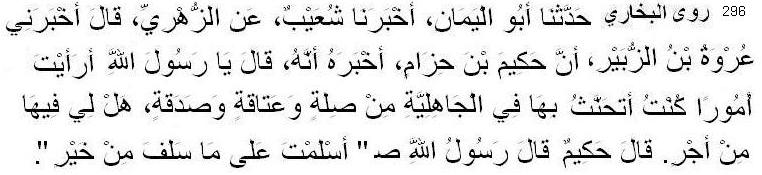


294 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. D‡¤§ `vi`v (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡j‡Qb: Ò**hLbB †Kvb gymwjg Zvi fvB‡qi Abycw¯’wZ‡Z Zvi Rb¨ †`vqv K‡i †d‡ikZvMY e‡j ‡Zvgvi Rb¨I GiKg †nvK**|Ó (AviI t Avng`)

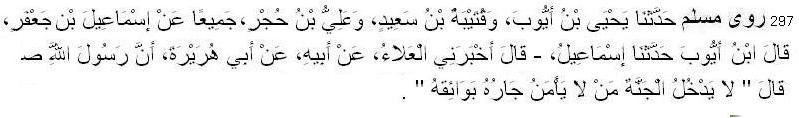


295 মুসলিম রেওয়ায়েত করেন ....... বুরায়দা হতে; তিনি বলেন, রাসুল স. তাদেরকে শিক্ষা দিতেন যখন তারা কবরস্থানে গমন করতেন, তিনি তখন তাদের লক্ষ্য করে বলতেন, “**আসসালামু আলাইকুম আহলাদ দিয়ারি মিনাল মুমিনীনা ওয়াল মুসলিমীন। ওয়া ইন্না ইনশা আল্লাহু লালাহিকূন। আছআলুল্লাহা লানা ওয়া লাকুম আফিয়াহ**।” [কবরবাসী মুমিন ও মুসলিমদের উপর সালাম। ইনশাআল্লাহ আমরাও অবশ্য তোমাদের সাথে মিলিত হব। আমাদের এবং তোমাদের জন্য আল্লাহর কাছে শান্তি ও নিরাপত্তা প্রার্থনা করছি।]

**wewea**



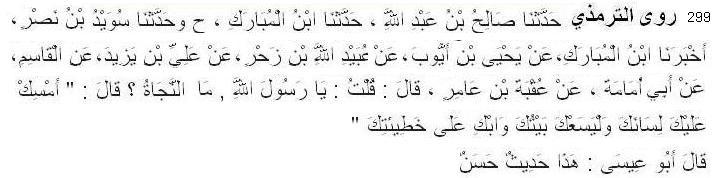
296 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. nvKxg web wnhvg (iv:) e‡jb: Avwg ejjvg, †n Avjøvni im~j! Avwg Rv‡njx hy‡M m`vKv, `vmgyw³, AvZ¥xqZv iÿv BZ¨vw` †hme †bK Avgj KiZvg Zvi Rb¨ †Kvb mIqve cve wK? im~j (m.) e‡jb, Ò**AZx‡Z Kiv fv‡jv KvRmnB Zzwg gymwjg n‡qQ**|Ó



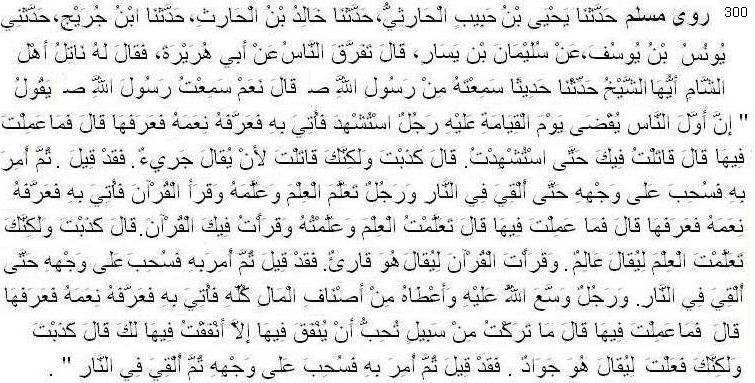
297 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey ûivqiv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡j‡Qb: Ò**†m Rvbœv‡Z hv‡e bv hvi hyjyg †\_‡K Zvi cokx wbivc` bq**|Ó



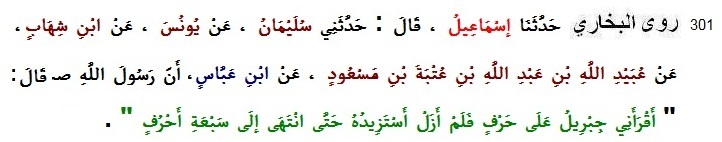
298 **nvwKg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avãyjøvn Be‡b mvjvg (iv.) †\_‡K, im~j (m.) e‡jb, Ò**hvi Kj‡e mi‡l exR cwigvY wKwei \_vK‡e †m Rvbœv‡Z `vwLj n‡e bv|Ó** (AviI t Zvevivbxi gyRvg Kexi; nv`xmwU nvmvb)



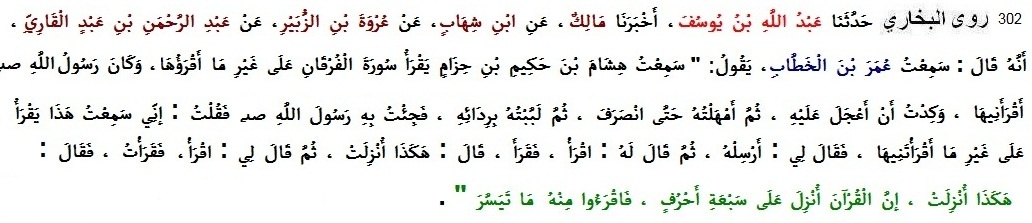
299  **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. DKev Be‡b Avwgi (iv:) †\_‡K, GK`v wZwb bex (m.) †K ej‡jb, bvRvZ Kx? bex (m.) ej‡jb, Ò**Zywg †Zvgvi wRnev mvg‡j ivL, †Zvgvi evwo‡Z \_vK Ges †Zvgvi cv‡ci Rb¨ Kvu`|Ó** (AviI t Avng`; mnxn)



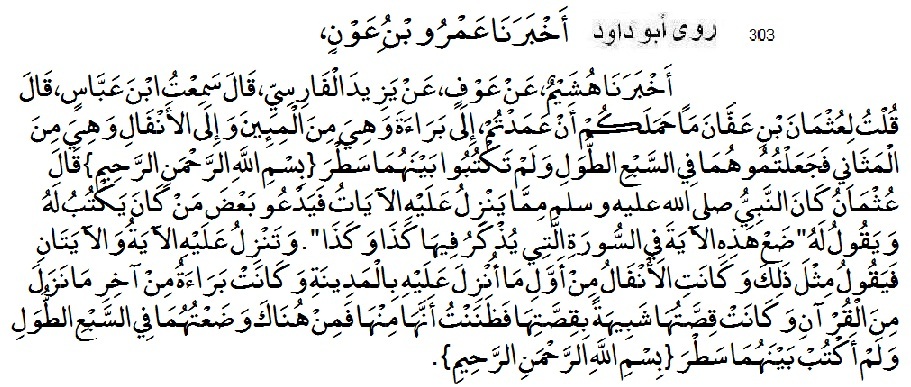
300 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey ûivqiv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡jbt **wKqvgZ w`e‡m c‡njv hv‡`i wePvi Kiv n‡e Zv‡`i g‡a¨ \_vK‡e GK e¨w³ hv‡K knx` Kiv n‡qwQj| Zv‡K Avbv n‡e, Zv‡K †`Iqv wbqvgZmg~n Rvbv‡bv n‡e, †m †m¸‡jv‡K wPb‡Z cvi‡e| Zv‡K Avjøvn ej‡eb, ÒG¸‡jv w`‡q Zzwg Kx KvR K‡iQ?Ó †m ej‡e, ÒAvgv‡K knx` bv Kiv ch©šÍ hy× K‡iwQ|Ó wZwb ej‡eb, Ôwg\_¨v ejQ, Zzwg hy× K‡iQ hv‡Z †Zvgv‡K evnv`yi ejv nq| Zv †Zv ejv n‡q‡Q|Ó Gici Zv‡K Av‡`k †kvbv‡bv n‡e Ges Dëv gy‡L Av¸‡b wb‡ÿc Kiv n‡e| Gici GKRb †jvK G‡jg wk‡LwQj, Ab¨‡K wkLvZ Ges KziAvb wK¡ivAvZ KiZ| Zv‡K †`Iqv wbqvgZmg~n Rvbv‡bv n‡e, †h¸‡jv‡K †m wPb‡e| wZwb Zv‡K ej‡eb, ÒG¸wj w`‡q Zzwg Kx Avgj K‡iQ?Ó †h ej‡e, G‡jg wk‡LwQ, Ab¨‡K wkLv‡qwQ, KziAvb wK¡ivAvZ K‡iwQ|Ó wZwb ej‡eb, Òwg\_¨v ejQ| Zzwg G‡jg wk‡LQ †hb †jv‡K Av‡jg e‡j Avi KziAvb c‡oQ hv‡Z †jv‡K e‡j †m GKRb K¡vix| Ggb ‡Zv ejv n‡q‡QÓ Gici Zv‡K Av‡`k †kvbv‡bv n‡e Ges Dëv gy‡L Av¸‡b wb‡ÿc Kiv n‡e| Avi GKRb \_vK‡e hv‡K A‡bK gvj †`qv n‡qwQj| Zv‡K Avbv n‡e, Zvi wbqvgZmg~n Rvbv‡bv n‡e, †h¸‡jv‡K †m wPb‡e| wZwb ej‡eb, ÒG¸wj w`‡q Zzwg Kx Avgj K‡iQ?Ó †m ej‡e, ÒAvcbvi [mš‘wói] Rb¨ Qvov Ab¨ †Kvb Kvi‡Y Avcbvi cQ›`bxq c‡\_ Zv e¨q Kwiwb|Ó wZwb ej‡eb, Òwg\_¨v ejQ, Zzwg Ggb K‡iQ hv‡Z †Zvgv‡K `vZv ejv nq| Zv †Zv ejv n‡q‡Q|Ó Gici Av‡`k †kvbv‡bv n‡e Ges Dëvgy‡L Av¸‡b wb‡ÿc Kiv n‡e**|Ó (AviI t nvwKg, Avng`, bvQvqx)



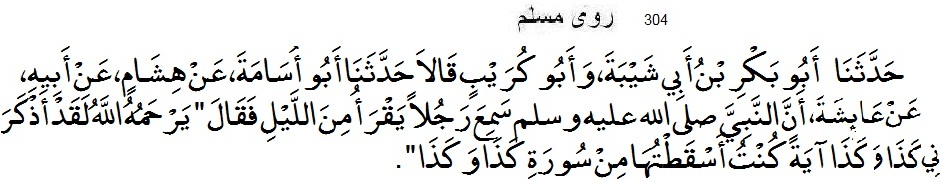
301 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Be‡b AveŸvQ (iv.) †\_‡K, im~j (m.) e‡jb, Ò**wReivBj Avgv‡K GKwU ni‡d KziAvb cov‡jb Avi Avwg Zv‡K evi evi Aby‡iva Kijvg he ZK bv wZwb mvZ ni‡d KziAvb cov‡jb**|"



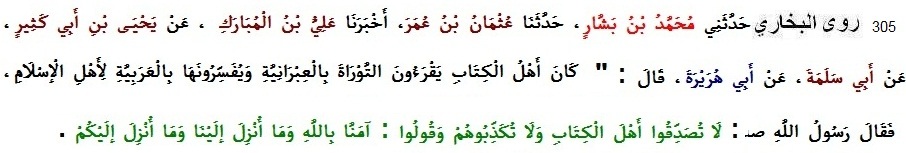
302 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Dgi (iv.) †\_‡K, Avwg wnkvg web nvKxg‡K m~iv dziKvb Ggb k‡ã co‡Z ïbjvg hv Avwg †hfv‡e cwo Zv †\_‡K wfbœ Ges hv bex (m.) †\_‡K †kLv| Avwg Zv‡K im~j (m.)Gi Kv‡Q wb‡q †Mjvg Ges ejjvg, †n im~j, GB †jvK Ggb k‡ã c‡o hv Avcwb Avgv‡K †hfv‡e cwo‡q‡Qb Zv †\_‡K wfbœ| im~j (m.) Zv‡K ej‡jb, Ò**Zzwg co|Ó †m** coj, wZwb ej‡jb, Ò**KziAvb Gfv‡e bvwhj n‡q‡Q|** Gici wZwb Avgv‡K ej‡jb, Ò**Zzwg co|Ó** Avwg cojvg,wZwb ej‡jb, Ò**KziAvb Gfv‡e bvwhj n‡q‡Q| KziAvb mvZ ni‡d bvwhj n‡q‡Q| AZGe †hUv mnR nq †mfv‡e co**| [[27]](#footnote-27)



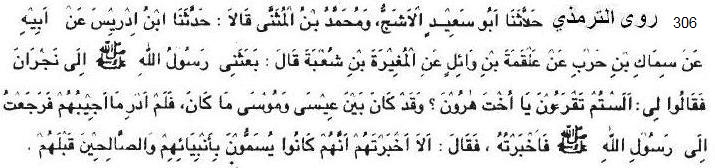
303 **Avey `vD`** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. BqvwR` dv‡iQx †\_‡K, Be‡b AveŸvQ (iv.) e‡jb, Avwg DQgvb‡K ejjvg, wK Kvi‡Y Avcwb m~iv ZIev I m~iv Avbdvj‡K mvZwU j¤^v m~ivi g‡a¨ kvwgj K‡i‡Qb Avi G‡`i g‡a¨ ÒwemwgjøvnÓ †j‡Lb wb? DQgvb (iv.) ej‡jb, hLb KziAv‡bi AvqvZ bvwhj nZ bex (m.) Zvi kÖæwZ‡jLK‡`i ga¨ †\_‡K KvD‡K WvK‡Zb Ges ej‡Zb: Ò**GB AvqvZ‡K H m~ivi H RvqMvq †jL †hLv‡b GB GB K\_v ejv n‡q‡Q|Ó** m~iv Avbdvj n‡”Q g`xbvq bvwhj nIqv c‡njv m~iv| m~iv ZIev KziAv‡bi me‡k‡l bvwhj nIqv m~iv| ZvB Avwg G `ywU‡K mvZwU j¤^v m~ivi g‡a¨ kvwgj K‡iwQ Avi G `ywU m~ivi g‡a¨ ÒwemwgjøvnÓ wjwL wb| (AviI: Avng`, wZiwghx, nvwKg) [[28]](#footnote-28)



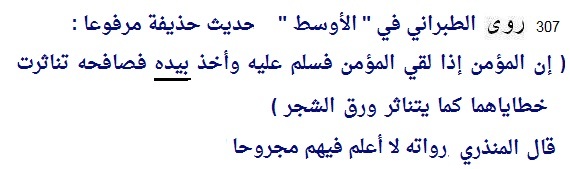
304 **gymwjg** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avwqkv (iv:) †\_‡K, bex (m.) iv‡Z GK †jvK‡K KziAvb co‡Z ïb‡jb| wZwb ej‡jb, **Avjøvn Zv‡K ing Kiæb, †m Avgv‡K AgyK AgyK m~ivni AgyK AgyK AvqvZ Bqv` Kwi‡q w`‡q‡Q hv Avwg fz‡j wM‡qwQjvg**| [[29]](#footnote-29)



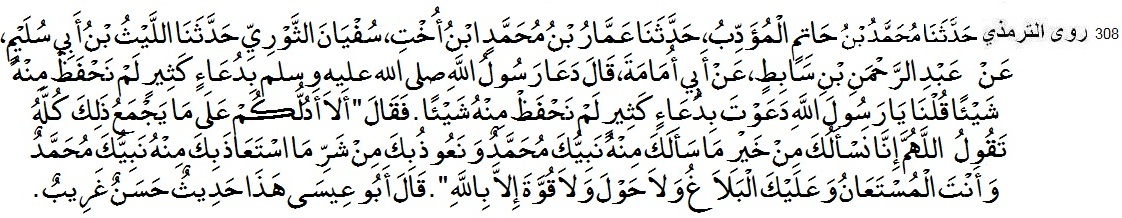
305 **eyLvix** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey ûivqiv (iv:) †\_‡K, wZwb e‡jb, Avn‡j wKZve †jvKiv wneiæ fvlvq ZvIivZ coZ Ges Aviex fvlvq Zv gymwjg‡`i Kv‡Q ZvdQxi KiZ| G †cÖwÿ‡Z bex (m.) ej‡jb, **†Zvgiv Avn‡j wKZve †jvK‡`i‡K mZ¨vqb Ki bv, wg\_¨vI e‡jv bv eis †Zvgiv ej‡e- Avgiv Cgvb ivwL Avjøvn‡Z Ges wZwb hv Avgv‡`i Dci bvwhj K‡i‡Qb Ges hv ‡Zvgv‡`i Dci bvwhj K‡i‡Qb Zv‡Z|**  [[30]](#footnote-30)



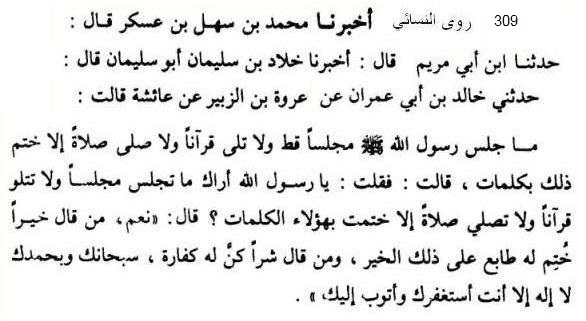
306 **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. gyMxiv web ïÕev (iv:) †\_‡K, wZwb e‡jb, Avwg hLb bvRiv‡b †Mjvg bvmviviv Avgv‡K ejj, †Zvgiv KziAv‡b co Ò‡n nviæ‡bi †evbÓ (A\_©vr gwiqvg) A\_P g~mv wQ‡jb hxïi A‡bK Av‡M| bex (m.) ej‡jb, **Zywg Zv‡`i‡K ej‡Z cviwb †h Zviv Zv‡`i bvg Zv‡`i Av‡Mi †bKKvi †jvK‡`i bv‡g ivLZ?**  [[31]](#footnote-31)



307 **Zvevivbx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. ûhvqdv (iv:) †\_‡K, bex (m.) e‡j‡Qb, Ò**hLb †Kvb Cgvb`vi Zvi fvB‡qi mv‡\_ †`Lv K‡i, mvjvg †`q, Zvi GK nvZ w`‡q a‡i Ges gymvdvnv K‡i Zv‡`i †`vbvR‡bi ¸bvn Mv‡Qi cvZvi gZ S‡i hvq**| (gyRvg AvImvZ; gybwhix e‡j‡Qb, Avwg GB nv`x‡mi eY©bvKvix‡`i g‡a¨ †Kvb mgv‡jvwPZ eY©bvKvix Rvwb bv|) [[32]](#footnote-32)



308  **wZiwghx** †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .............. Avey Dgvgv (iv:) †\_‡K, wZwb e‡jb, bex (m.) A‡bK iKg evK¨ Øviv †`vqv Ki‡Zb hvi wKQz wKQz Avgiv wndvhZ Ki‡Z cviZvg bv| Avgiv im~j (m.)‡K ejjvg, †n Avjøvni im~j, Avcwb A‡bK iKg evK¨ Øviv †`vqv K‡ib hvi wKQz wKQz Avgiv wndvhZ Ki‡Z cvwi bv| wZwb ej‡jb, **Avwg wK †Zvgv‡`i‡K Ggb wKQz eje bv hv me †`vqv‡K GKÎ K‡i? Zv nj GB K\_v ejv: Avjøvû¤§v Bbœv bvQAvjyKv wgb Lvqwi gv QvAvjvKv wgbû bvweq¨yKv gyn¤§v`yb Iqv bvDhyweKv wgb kviwi gvQZvÕhv weKv wgbû bvweq¨yKv gyn¤§v`yb Iqv AvbZvj gymZvAvb| Iqv AvjvBKvj evjvM| Iqv jv- nvIjv Iqv jv- KzIqvZv Bjøv wejøvn**| (wZiwghx e‡jb nv`xmwU nvmvb Mixe) [[33]](#footnote-33)



309 **bvQvqx**  †iIqv‡qZ K‡i‡Qb .......... Av‡qkv (ivt) †\_‡K; wZwb e‡jb, Avwg Avjøvni im~j (m:) †K ejjvg, †n im~jyjøvn, Avwg †`‡LwQ Avcwb †Kvb gRwj‡m e‡mb bv A\_ev KziAvb †ZjvIqvZ K‡ib bv A\_ev mvjvZ c‡ob bv KZK¸wj Kv‡jgv covi gva¨‡g †kl bv K‡i| bex (m:) ej‡jb, Ò**n¨v| †h fv‡jvfv‡e †kl K‡i Zvi Rb¨ GUv fv‡jv mxj nq Avi †h Lvivc wKQz e‡j †d‡j Zvi Rb¨ GB Kv‡jgv¸wj Kvddviv nq: QzenvbvKv Iqv wenvgw`Kv, jv Bjvnv Bjøv AvbZv, AvQZvMwdiæKv Iqv AvZzey BjvBK|** (bvQvqxi Avgvjyj BqvIwg Iqvj jvBjvn)

**wiRvj (ivex) cwiwPwZ**

AvId Be‡b gvwjK - mvnvex

AvQgv web‡Z Avey eKi [g.73 wn.] - mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi k¨vwjKv

AvQgv web‡Z Bqvhx` [63 wn.] - mvnvweq¨vn, Avbmvwiq¨vn

AvQgv web‡Z DgvBQ [g 80 wn.] - mvnvweq¨vn, g°xq¨vn, bex (m.)- Gi PvPvZ fvB Rvd‡ii wewe,

c‡i Avey eK‡ii wewe, c‡i Avjxi wewe|

Av`x web nv‡Zg - mvnvex, Zvqx †MvÎfy³ mv‡eK bvmviv (খ্রিস্টান) weØvb

AvbvQ web gvwjK - mvnvex, bex (m.)- Gi Lv‡`g, Zvi gv D‡¤§ myjv‡qg wQ‡jb bex (m.)- Gi `~i m¤úK©xq Lvjv

Avey Dgvgv - mvnvex

Avey KvZv`v - mvnvex

Avey †Kjvev - †QKvn Zv‡eqx (gy`vjøvm bb)

Avey Qvjvev Lykvbx - mvnvex

আবু দাউদ সুলায়মান বিন আশআছ সিজিস্তানী – সুনান সংকলক, জন্ম শকস্তান/সিজিস্তান বা সিস্তানে।

আবু নাযরা –তাবেয়ী, ছেকাহ

Avey` `vi`v - mvnvex

আবু বকর সিদ্দিক (৫৭৩ খ্রিষ্টাব্দ - ৬৩৪ খ্রিষ্টাব্দ) - একজন প্রধান সাহাবি, ইসলামের প্রথম খলিফা এবং প্রথম মুসলিমদের মধ্যে অন্যতম। রসুল (স.) এর শ্বশুর ছিলেন। রসুল (স.) এর মৃত্যুর পর তিনি খলিফা হন এবং মুসলিমদের নেতৃত্ব দেন। অতুলনীয় বিশ্বাসের জন্য তাকে সিদ্দিক বা বিশ্বস্ত উপাধি প্রদান করা হয়েছে।

Avey gvimv` - mvnvex

আবু মাছউদ বদরী - সাহাবী

Avey gvwjK AvkAvix - mvnvex

Avey g~mv AvkAvix - mvnvex

Avey hi - mvnvex, wMdvix

Aveyj AvnIqvm - mvnvex

Avey mvB` খুদরী - mvnvex

আবু সালামা বিন আবদুর রহমান-

আবু হাইয়াজ - তাবেয়ী

আবু হুমাইদ সাইদী- সাহাবী

আবু হুমাইদ মুনযির - সাহাবী

Avey ûivqiv `vImx - mvnvex

Avãy Lv‡qi - †QKvn Zv‡eqx

আবদুর রহমান বিন কাছেম- †QKvn

আবদুর রহমান বিন যায়েদ- তাবেয়ী

আবদুল্লাহ ইবনে আবদুল্লাহ ইবনে উমার - সাহাবী

Avãyjøvn Be‡b AveŸvQ/ Be‡b AveŸvQ - mvnvex, bex (m.)- Gi PvPvZ fvB

Avãyjøvn Be‡b Avgi - mvnvex

Avãyjøvn Be‡b Bqvgvi - mvnvex

আবদুল্লাহ ইবনে আমির- সাহাবী

আবদুল্লাহ ইবনে মাছলামাহ - †QKvn

Avãyjøvn Be‡b Dgi/ Be‡b Dgi - mvnvex, bex (m.)- Gi k¨vjK

আবদুল্লাহ ইবনে ছারজীস - সাহাবী

Avãyjøvn Be‡b gvQD` - mvnvex

আবদুল্লাহ ইবনে মুগাফফাল - সাহাবী

Avãyjøvn Be‡b gyeviK - †QKvn

Avãyjøvn Be‡b hv‡q` - mvnvex whwb ¯^‡cœ Avhvb †`‡LwQ‡jb|

Avãyjøvn Be‡b mvjvg - mvnvex

আবদুল্লাহ ইবনে য়ুসুফ - ছেকাহ

AveŸvQ - mvnvex, bex (m.)- Gi PvPv

আমবাসা – ছেকাহ

Avgi Bebyj Avm - mvnvex

আমর ইবনুল হারিছ – সাহাবী, নবীর শ্যালক, জুওয়ায়রিয়ার ভাই।

Avgi Be‡b Lvwj` - †QKvn

আ’মাশ - ছেকাহ

আমির বিন আবদুল্লাহ ইবনে যুবাইর - ছেকাহ

আম্মার বিন ইয়াছার - সাহাবী

আরিম – ছেকাহ, ইমাম আহমদের শায়েখ। শেষ বয়সে তার স্মৃতি গড়বড় হয়েছিল। তবে তখন তিনি হাদীস বর্ণনা করতেন না।

AvjKvgv Be‡b Iqv°vm jvBQx - †QKvn Zv‡eqx

Avjx nvq`vi - mvnvex, bex (m.)- Gi RvgvB

আলী বিন হুজর - ছেকাহ

Avwmg web KzjvBe - †QKvn

আহমদ বিন ইবরাহীম দুরকী – ছেকাহ

আহমদ বিন হামবল – ছেকাহ, মুসনাদ সংকলক

Avwqkvn - mvnvweq¨vn, আবু বকরের বেটি, bex (m.)- Gi wewe

ইবনে মাজাহ – সুনান সংকলক

ইবরাহীম বিন ছা’দ – ছেকাহ

ইরবায বিন ছারিয়াহ – সাহাবী

ঈসা বিন য়ুনুস – ছেকাহ

DKev Be‡b Avwgi Rynvbx - mvnvex

উসমান ইবন আফ্‌ফান ((৫৮0 - ৬৫৬) ছিলেন ইসলামের তৃতীয় খলীফা। ৬৪৪ থেকে ৬৫৬ খ্রিস্টাব্দ পর্যন্ত খিলাফতে অধিষ্ঠিত ছিলেন। খলিফা হিসেবে তিনি চারজন খুলাফায়ে রাশিদুনের একজন। উসমান আস-সাবিকুনাল আওয়ালুনের (প্হেলা পর্বে ইসলাম কবুলকারী) অন্তর্ভুক্ত।

DQgvb web nvKxg - †QKvn

DevB Be‡b KvÕe - mvnvex

Dev`vn Bebym mvwgZ - mvnvex

উবায়দুল্লাহ বিন আবদুল্লাহ – ছেকাহ

উমর ইবনুল খাত্তাব (জন্ম ৫৭৭ খ্রিষ্টাব্দ - মৃত্যু ৬৪৪ খ্রিষ্টাব্দ) প্রধান সাহাবীদের অন্যতম। আবু বকরের মৃত্যুর পর তিনি দ্বিতীয় খলিফা হিসেবে দায়িত্ব নেন। রসুল (স.) এর শ্বশুর ছিলেন।

DgvBgv web‡Z iæKvBqvKv - mvnvweq¨vn

উম্মে আয়মান বারাকাহ- সাহাবিয়াহ

D‡¤§ Kv‡qm web‡Z wgnmvb - mvnvweq¨vn

D‡¤§ Kzi&h KvÕweqv - mvnvweq¨vn

উম্মে কুলছুম বিনতে উকবা – সাহাবিয়াহ

উম্মে দারদা – সাহাবিয়াহ, আবুদ দারদার বিবি

D¤§yj dhj jyevev - mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi PvPx, AveŸvQ (iv.)Gi wewe

D‡¤§ dviIqvn - mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi dzddxk¦vïix, Avwqkvi dzddx

D‡¤§ gyevkwki - mvnvweq¨vn

D‡¤§ ïivBK - mvnvweq¨vn

উম্মে হানী – নবীর চাচাতো বোন, আলীর বোন

D¤§yj ûmv‡qb - mvnvweq¨vn

D‡¤§ ivwd mvjgv gIjv mvwdq¨v - mvnvweq¨vn

D‡¤§ mvjvgv - mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi wewe

উরওয়া বিন যুবাইর – আয়িশার ভাইপো

Iqvwemv Be‡b gvÕev` - mvnvex

Iqv‡qj web nyRi - mvnvex, nvhivgx (nvhivgvI‡Zi Awaevmx)

কবীছা বিন যুবাইব - সাহাবী

কাবশা বিনতে কাব বিন মালিক – শ্বশুর আবু কাতাদা

KvÕe web DRiv - mvnvex

কাব বিন মালিক - সাহাবী, কাবশার পিতা

কায়েছ বিন আছিম - সাহাবী

কাছেম বিন সাইদ - সাহাবী

KyZvqev web mvC` - †QKvn

খাওলা বিনতে কয়েছ -

Lvbmv web‡Z wL`vg - mvnvweq¨vn,

Lvwj` web mvjvgv - †QKvn

QvBe Be‡b Bqvhx` - mvnvex

QvB` Avj gvKeyix - †QKvn

ছাঈদ বিন মানসূর – ছেকাহ, মুসনাদ সংকলক।

QvC` web qvnqv web QvC` Dgvfx- †QKvn

ছা’দ বিন আবু ওয়াক্কাস – সাহাবী

ছাবিত আল বুনানী – ছেকাহ তাবেয়ী

Qvgyiv বিন জুনদুব - mvnvex

Qvnj web QvÕ` Qv-C`x - mvnvex

Qzwdqvb QIix - †QKvn

Rixi বাজালী - mvnvex

Rvwei web Avãyjøvn - mvnvex

Rvwei web Qvgyivn - mvnvex

জুওয়ায়রিয়া – নবীর বিবি

ZvwiK web Avkqvg Avkhvqx - mvnvex

Zvjnv web Avãyjøvn - †QKvn Zv‡eqx

দাহহাক বিন ছুফিয়ান – সাহাবী

byÕgvb web evkxi – mvnvex

নুসাইবা উম্মে আমারা বিনতে কাব নাজ্জারিয়াহ- সাহাবিয়াহ। আকাবা বায়াত, উহুদ ও ইয়ামামায় শরীক ছিলেন।

dvwZgvn [g. 11 wn.] mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi †eUx

বারা বিন আযেব – সাহাবী

বুখারী মুহম্মদ বিন ইসমাঈল – সহীহ সংবলক

বুরায়দা - সাহাবী

gvqgybv webZzj nvwiQ [g.49 wn.] - mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi wewe

gvwjK Bebyj nyIqvBwiQ - mvnvex

gvngy` Be‡b jvex` - mvnvex

মিকদাম বিন মা’দীকারিব – সাহাবী

gyAvweAvn Bebyj nvKvg - mvnvex

মুআয বিন জাবাল – সাহাবী

মুছা বিন মায়ছারা - ছেকাহ

gyQvÏv` - †QKvn

gyQv web Zvjnv - †QKvn

মুসলিম বিন হাজ্জাজ - সহীহ সংবলক

মুহম্মদ বিন আমর বিন আতা – তাবেয়ী ছেকাহ

gyn¤§` web Avhjvb - m`yK (mZ¨ev`x) Z‡e fyjKvix

gyn¤§` web Beivnxg - †QKvn, Zvgxgx

মিুহম্মদ বিন মাছলামা – সাহাবী

gyn¤§` web gyKvwZj - †QKvn

hqbve web‡Z Avey gyAvweqv - mvnvweq¨vn ,

hv‡q` web LvwiRv - mvnvex

hv‡q` web Lvwj` - mvnvex

hv‡q` Be‡b QvweZ - mvnvex

hyev‡qi Be‡b gyZCg - mvnvex

hynv‡qi - †QKvn

যুহরী ইবনে শিহাব – ছেকাহ

রবিআহ বিন আব্বাদ দায়লী – সাহাবী

iæevBwqÕ web‡Z gyIqvIwqh - mvnvweq¨vn [g. 71-79 wn.?] g`xbvi Awaevmx, নবী (স.)এর মায়ের গোত্রের

jvKxZ Be‡b mveiv - mvnvex

লায়লা আনসারিয়া – সদুক, তাবেয়ী, নুসাইবার মুক্ত দাসী

শাদ্দাত বিন আওছ – সাহাবী

kvqevb - †QKvn

mvB` Bebyj gymvq¨ve - †QKvn Zv‡eqx, আবু হুরায়রার জামাই

সাঈদ বিন আবু হিন্দ – সদুক

mvC` web wgnmvb - mvnvex

mvIevb - mvnvex

mvwdq¨vn web‡Z ûqvB [g. 50wn.] mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi wewe, Bû`x m`©v‡ii †ewU

সালমান ফার্সী - mvnvex

mvjvgv Be‡b AvKIqv - mvnvex

mv‡jg বিন আবদুল্লাহ- †QKvn Zv‡eqx, Be‡b Dg‡ii †eUv

myIqvB` web bvmi - †QKvn

myjvqgvb Zvqgx - †QKvn (Bgvg gymwj‡gi Kv‡Q)

সুহায়রা – তাবেয়ী, অবস্থা অজানা; তবে কোন নারী বর্ণনাকারীর মিথ্যাবাদী হওয়ার উদাহরণ নেই।

হাকীম বিন হিযাম – সাহাবী

হাকিম নিশাপুরী – ছেকাহ, মুসতাদরাক সংকলক

nvdQv web‡Z Dgi - mvnvweq¨vn, bex (m.)- Gi wewe

হাবীব বিন যায়েদ – ছেকাহ

হামীদ বিন আব্দুর রহমান – তাবেয়ী, ছেকাহ; তার পিতা আব্দুর রহমান বিন আওফ, মা উম্মে কুলছুম বিনতে উকবা

হামীদাহ বিনতে উবায়েদ বিন রিফাআহ – ছেকাহ

হাম্মাদ বিন সালামাহ – ছেকাহ

হারিছ বিন আব্দুল্লাহ বিন আওফ – ছেকাহ

nvmvb emix - †QKvn Zv‡eqx (gy`vjøvm bb)

হুমায়দী – ছেকাহ, বুখারীর শায়েখ, মুসনাদ সংকলক

ûgv‡q` - †QKvn Zv‡eqx

হুযায়ফা বিন ইয়ামান – সাহাবী

য়াকূব বিন ইবরাহীম বিন ছা’দ - ছেকাহ

য়াযীদ আল ফারিসী – সদুক, তাফযিলী শিআ।

qvnqv web QvC` Dgvfx- †QKvn

য়াহয়া বিন হামযা - †QKvn

য়ুনুছ বিন য়াযীদ - †QKvn

QzenvbvKv Iqv wenvgw`Kv, jv Bjvnv Bjøv AvbZv, AvQZvMwdiæKv Iqv AvZzey BjvBK|

RLxiv‡q nv`xm cyw¯ÍKvwUi KwcivBU †bB|

†h †KD Gi cyYg©y`ªY, d‡UvKwc, ¯‹¨vb Ki‡Z cvi‡eb|

abu.kab.weebly.com

এই লেখকের রচিত ও তরজমাকৃত কিতাবসমূহ:

1. একাধিক উপাস্য কি সত্য না সের্ফ এক উপাস্য?- জায়েদ লাইব্রেরী, 30-11-2011

2. তাজকিরায়ে সাহাবা 11-06-2013

3. তালবীছু ইবলীস (মূল আবুল ফারাজ ইবনুল জাওযী), 2014

4. কুরআনের ভাষ্যে মানুষের উৎপত্তি-কর্ম-পরিণতি, 21-01-2015

5. Mercy of the Worlds Muhammad (pbuh), 01-04-2014

6. Principles of Shariah, 23-07-2014

7. Surprises of the Quran, Jan, Feb, April 2008, Muslim Digest

8. জগতসমূহের জন্য রহমত, 05-04-2015

9. মুলাখখাস মুকাদ্দামা মুসলিম, 09-07-2015

10. ফিতনার মাঝে করণীয় কী?- 01-09-2015

11. রহস্যময় দুনিয়ার আজব খবর (পহেলা হিসসা) 13-10-2015

12. সত্য কবুল করি মিথ্যা বর্জন করি, 15-12-2015

13. উপলব্ধি (পহেলা হিসসা) 01-03-2016

14. বাইবেলের কথা: যীশুর সুসংবাদ, 04-05-2016

15. খাসা পুরষ্কার মেলে যে-কাজে, 29-05-2016

16. জখীরায়ে হাদীস, 15-06-2016

17. Treasure Trove of Hadith, 17-06-2016

18. সবখানে আছে কোন না কোন মুসলিম কাহিনী, 17-06-2016

19. ছুওয়াইবাহ-কাবের হরফমালা 17-06-2016

20. Virtue of the Quran (Fazail al-Quran) (Imam Nasaai) ........

21. Modelling Stress-Strain of Chittagong Clay, 2007 Proceedings of ANZ Conference

on Geo-mechanics

22. আলমে বারযাখ, মুসলিম ডাইজেস্ট ........

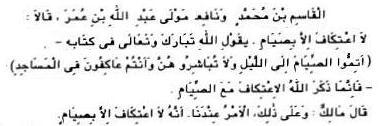
23. Where Can We Find Pure Islam? .......

আবু ছুওয়াইবাহ আবু কাব আনীসুর রহমানের জন্ম নাটোর জেলার শ্রীপুর গ্রামে। পিতা আব্দুল কুদ্দুস ছিলেন একটি কলেজের সহকারী অধ্যাপক। মাতা গৃহিনী। কারী ওয়াফেরুদ্দীন সাহেবের কাছে কিরাআত এবং মাওলানা সাইদুল ইসলাম ও মাওলানা আব্দুল গনীর কাছে আকীদা শিক্ষা। রাজশাহী কলেজ থেকে এইচএসসি, বিআইটি চট্টগ্রাম (1ম বর্ষ) ও বিআইটি রাজশাহী থেকে বিএসসি ইন সিভিল ইনজিনিয়ারিং এবং বাংলাদেশ প্রকৌশল বিশ্ববিদ্যালয় বুয়েট থেকে এমএসসি ইন জিওটেকনিকাল ইনজিনিয়ারিং ডিগ্রী অর্জন। একটি উন্নয়ন সংস্থায় কর্মরত। শায়েখ আব্দুন নূর মাদানী ও নূরুল আবসার সাহেবের সোহবতে ইসলামী ফিকহ শিক্ষা। গৃহিনী ‘জাকিয়া বিনতে রেজা’-র শওহর এবং ছুওয়াইবাহ ও কাবের বাবা।

1. 3 dimL = 9 gvBj = 14.48 wK.wg. `~ieZ©x RvqMvq †M‡j mvjvZ Kmi Kiv wbivc`|

   Pvi evwi` (ev 48 gvBj)-Gi nv`xm mnxn bq| [↑](#footnote-ref-1)
2. mIg fs‡Mi KviYt 1. B”Qv K‡i Lvbvwcbv, bv‡Ki g‡a¨ ev Bb‡RKk‡bi gva¨‡g cywó †bqv 2. B”Qv K‡i ewg Kiv 3. B”Qv K‡i wewei mv‡\_ wgjb A\_ev exh©cvZ Kiv 4. mIg fs‡Mi wbqvZ Kiv 5 bvix‡`i nv‡qh, †bdvm nIqv

   B”Qv K‡i igvhv‡b mIg †fs‡M †dj‡j Zv‡K Kvddviv wnQv‡e GKwU `vm Avhv` Ki‡Z A\_ev GKvav‡i `yB gvm mIg ivL‡Z A\_ev lvURb wgQKxb‡K LvIqv‡Z n‡e| mdi, ‡ivM, gwnjv†`i nv‡qh, †bdvm, Mf©ve¯’v I `ya`v‡bi Kvi‡Y mIg fsM n‡j Kvhv (1wUi Rb¨ 1wU) Ki‡Z n‡e| [↑](#footnote-ref-2)
3. bex (m:) ni †mvgev‡i mIg ivL‡Zb| wZwb KL‡bv 12 iwe AvIqv‡j †Kvb Abyôvb K‡ib wb| †KD bexi Rb¥w`em cvjb Ki‡Z PvB‡j wZwb ni †mvgev‡i mIg ivL‡Z cv‡ib| [↑](#footnote-ref-3)
4. Bgvg gvwjK e‡jb,

   KvwQg web gyn¤§` I bvwd e‡jb, mIg Qvov BwZKvd nq bv| [↑](#footnote-ref-4)
5. w`invg ‰ivc¨ gy`ªv Avi w`bvi ¯^Y© gy`ªv| 200 w`invg = 5 AvIwKqv = mv‡o evnvbœ fwi i~cv| 20 w`bvi = 25 MÖvg 24 K¨v‡iU †mvbv ev 97 MÖvg 21 K¨v‡iU †mvbv ev 113 MÖvg 18 K¨v‡iU †mvbv [↑](#footnote-ref-5)
6. AvbvQ (iv:)Gi K\_v: AjsKv‡ii hvKvZ †bB - GB †iIqv‡qZ hCd (wZiwghx) ‡`Lyb Pvuw`i AvswU \_vK‡jB wbmve nq bv| Zvi c‡iI hvKvZ w`‡Z ejv n‡q‡Q| Rvnvbœv‡gi fq †`Lv‡bv n‡q‡Q `ywbqvi †miv bvix Avwqkv (iv:)-‡K|

   e¨en„Z AjsKv‡ii hvKvZ w`‡Z n‡e| GUv Avn‡j nv`xm‡`i dvZIqv| nvbvdx gvRnv‡ei dvZIqv e¨en„Z AjsKv‡ii hvKvZ w`‡Z n‡e| gv‡jKx, kv‡dqx, nv¤^jx gvRnv‡ei dvZIqv e¨en„Z AjsKv‡ii hvKvZ w`‡Z n‡e bv| [↑](#footnote-ref-6)
7. Zvweqx nvmvb emix (in) e‡jb, Be‡b AveŸvQ (iv) †kl ivgv`v‡b emivi (gmwR‡`i) wg¤^v‡ii Dc‡i LyZev †`b, wZwb wQ‡jb emivi Avgxi| ZLb wZwb e‡jb, †Zvgiv †Zvgv‡`i wmqv‡gi mv`Kv (wdZiv) `vI ZLb Zviv G‡K A‡b¨i w`‡K ZvKvZvwK K‡ib| Be‡b AveŸvQ ej‡jb, GLv‡b g`xbvi Awaevmx Kviv Av‡Q? †Zvgiv `vuovI Ges †Zvgv‡`i mv\_x‡`i‡K wk¶v `vI| KviY Zviv Rv‡b bv †h im~j (m.) GB mv`Kv (wdZi) wba©viY K‡i‡Qb GK mvÕ †LRyi A\_ev he A\_ev Avav mvÕ Mg, cÖ‡Z¨K ¯^vaxb, civaxb, †QvU, eo cyiæl I bvixi Dci| (bvQvqx) nv`xmwUi mb` hCd| Z‡e bvQvqxmn A‡b‡K MÖnY K‡i‡Qb|

   g`xbvi mv = 2512 সিসি cÖvq| BivKx mv = 3350 সিসি cÖvq| [↑](#footnote-ref-7)
8. আবদুল্লাহ বিন দীনার বলেন, আমরা কোন এক সফরে রসূলুল্লাহ (স.)-এর সংগে ছিলাম। তিনি (স.) তাঁর প্রয়োজনে বাইরে গেলে, আমরা সেখানে একটা চড়ুই পাখী দেখতে পাই, যার দু'টি বাচ্চা ছিল। তখন আমরা তার বাচ্চা দু'টি নিয়ে আসলে, সে আমাদের উপর আছড়ে পড়ে। এ সময় নবী (স.) এসে বলেন, কে এর বাচ্চা এনে একে কষ্ট দিচ্ছ! এর বাচ্চা একে ফিরিয়ে দাও। এরপর তিনি একটা পিঁপড়ার গর্ত, যা আমরা জ্বালিয়ে দিয়েছিলাম, দেখে বলেনঃ এদের কে জ্বালিয়ে দিয়েছে? তখন আমরা বলি, আমরা। তখন নবী (স.) বলেন, আগুনের রব ছাড়া আর কারো জন্য উচিত নয় যে, সে অন্য কাউকে আগুন দিয়ে শাস্তি দেবে। (আবু দাউদ) [↑](#footnote-ref-8)
9. wbqg n‡”Q 9 hyj n¾ m~h© †Wvevi AvM ch©šÍ Avivdv‡Z DKzd (Ae¯’vb) Ki‡Z n‡e| m~h© †Wvevi c‡i gyh`vwjdvq †h‡Z n‡e| wKš‘ †Kvb e¨w³ hw` 9 hyj n¾ (AvivdvZ w`e‡m) m~h© †Wvevi Av‡M nvwhi n‡Z bvI cv‡i dRi nIqvi Av‡MI hw` Avivdv‡Z nvwhi nq Zvi n¾ n‡e| [↑](#footnote-ref-9)
10. bex (m.) Av‡M KsKi †g‡i‡Qb Zvici Kzievbx, Zvici gv\_v gyÛb †k‡l ZvIqvd K‡i‡Qb| wKš‘ Av‡M c‡i Kivi AbygwZ w`‡q‡Qb| [↑](#footnote-ref-10)
11. mvaviYZ Kzievbxi wbqg n‡jv QvMj ev Miy GKvB GKwU Kiv| GKv GKwU Kzievbx Ki‡Z bv cvi‡j fv‡M Kzievbx Kivi wØZxq my‡hvM ‡bqv hvq| [↑](#footnote-ref-11)
12. `ywbqvq Cgvb`viiv K‡q`xi gZ wbR B”Qvq wKQzB Ki‡Z cv‡i bv Avi Kvwdiiv gb hv Pvq Zv K‡i| [↑](#footnote-ref-12)
13. সতর্কীকরণ: RvKvwiqv KvÜjfx wj‡L‡Qb, Beivnxg Av`nvg e‡jb, Ò`ywbqv I AvwLiv‡Zi †Kvb wKQzi cÖwZB †jvf Ki‡e bv| wb‡R‡K ïay Avjjvni Rb¨ Lvm K‡i bvI|" (RvKvwiqv KvÜjfx, dvhv‡q‡j Qv`vKvZ, ZvejxMx KZzeLvbv, 2007, c„ôv 478) G K\_v wVK bq| Avjøvn Rvbœv‡Zi †jvf †`wL‡q‡Qb| Avi bex (m:) G †`vqv Ki‡Zb Avjjvû¤§v Bbœx AvQAvjyKvj RvbœvZv Iqv AvDhyweKv wgbvb bvi| (Avey `vD`, Be‡b gvRvn, bvQvqx; mnxn) [↑](#footnote-ref-13)
14. gnvb Avjjvn e‡jb, Ò†Zvgv‡`i Rb¨ mvM‡ii wkKvi I Zvi Lv`¨ nvjvj|Ó (gvB`v 5:96)

    †hme cÖvYx me©`v R‡j \_v‡K Zv RxweZ I g„Z Dfq Ae¯’vq nvjvj| ZvB K”Qc LvIqv nvjvj| †hme cÖvYx wKQz mgq R‡j I wKQz mgq ¯’‡j \_v‡K Zv RxweZ a‡i h‡en K‡i LvIqv nvjvj| KvKovi i³ bv \_vKvq Zv h‡en Kivi `iKvi nq bv| Kzgxi Gi bLi \_vKvq Zv nvjvj bq| e¨¨O nvjvj bq nv`x‡m D‡jøL K‡i wb‡la Kivq| [↑](#footnote-ref-14)
15. যে কোন নারীর বিবাহের জন্য ওলী বা অভিভাবক আবশ্যক। অভিভাবক উপযুক্ত হওয়ার জন্য ৬টি শর্ত আছেঃ (১) বিবেকসম্পন্ন হওয়া (পাগল হলে হবে না), (২) প্রাপ্ত বয়স্ক হওয়া, (৩) স্বাধীন হওয়া, (৪) পুরুষ হওয়া (বিবাহের ক্ষেত্রে নারী নারীর অভিভাবক হতে পারবে না), (৫) অভিভাবক ও যার অভিভাবক হচ্ছে উভয়ে একই দ্বীনের অনুসারী হওয়া। (কাফের মুসলিম নারীর অভিভাবক হবে না। মুসলিম কাফের নারীর অভিভাবক হবে না।), (৬) অভিভাবক হওয়ার উপযুক্ত হওয়া। (অর্থাৎ যোগ্যতা পাত্র নির্বাচন করার জ্ঞান থাকা ও বিবাহের কল্যাণ-অকল্যাণের বিষয় সমূহ অনুধাবন জ্ঞান থাকা)

    অভিভাবক হওয়ার শর্তঃ

    উপরের কোন একটি শর্ত না পাওয়া গেলে তখন ঐ ব্যক্তি অভিভাবকত্ব হারাবে, তখন ঐ অভিভাবকত্ব পরবর্তী নিকটতম ব্যক্তির নিকট স্থানান্তরিত হবে। যেমন দাদা, তারপর ভাই, তারপর চাচা ইত্যাদি। শেষ পর্যন্ত যদি কেউ না থাকে, তবে মুসলিম শাসক বা তার প্রতিনিধি ঐ নারীর অভিভাবক হিসেবে গন্য হবে।

    কোন যুবক যদি দ্বীনদারী ও চরিত্রের দিক থেকে পছন্দনীয় হয়, অর্থাৎ সে আল্লাহকে ভয় করে চলে ফরয ইবাদত সমূহ যথাযথ আদায় করে যাবতীয় হারাম থেকে বেঁচে চলে এবং আচরণ ও চরিত্রের দিক থেকে উত্তম হয়, তবে সেই সর্বাধিক উপযুক্ত পাত্র।

    যদিও দুনিয়াদারী বা অর্থ-সম্পদের বিষয়টিকেও কেউ কেউ উপযুক্ত হওয়ার শর্ত হিসেবে উল্লেখ করেন। কিন্তু তা যথার্থ নয়। কেননা আল্লাহ বলেছেন, তোমাদের মধ্যে যারা বিবাহহীন, তাদের বিবাহ সম্পাদন করে দাও এবং তোমাদের দাস ও দাসীদের মধ্যে যারা সৎকর্মপরায়ন, তাদেরও। তারা যদি সম্পদহীন নিঃস্ব ও ফকীর হয়, তবে আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে সচ্ছল করে দেবেন। আল্লাহ প্রাচুর্যময়, সর্বজ্ঞ। (নূরঃ ৩২) এটা বিবাহের বরকত।

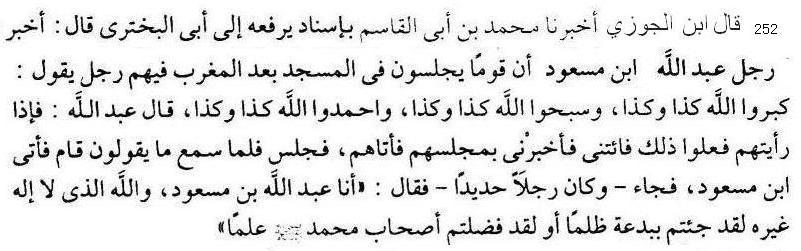
    বিবাহে ওলী বা অভিভাবকের বাধাঃ

    একজন উপযুক্ত যুবক যদি কোন মেয়েকে বিবাহের প্রস্তাব দেয় (অর্থাৎ সেই যুবক দ্বীনদারী ও চরিত্রের দিক থেকে পছন্দনীয় হয়), আর মেয়েও ঐ যুবককে পছন্দ করে, আর শরীয়ত সম্মত কারণ ব্যতীত মেয়ের অভিভাবক ঐ বিবাহে বাধা প্রদান করে তবে শরীয়তের পরিভাষায় এটাকে বলা হয়, العضل বা বিবাহে বাধা। (ইবনে কুদামা- মুগনী ৭/৩৬৮) [↑](#footnote-ref-15)
16. অনেক অভিভাবক উপযুক্ত প্রস্তাবকারীদেরকে নানা অযুহাতে প্রত্যাখ্যান করে; অথচ তার ব্যাপারে পাত্রীর সম্মতি আছে। এ অবস্থায় পাত্রী স্বভাবজাত লাজুকতার কারণে পরিস্থতির স্বীকার হয়, যথাযথ প্রতিবাদ করতে পারে না। কাজী বা বিচারকের কাছে তার অভিযোগ পেশ করতে লজ্জাবোধ করে। সৌদী আরবের সাবেক গ্রাণ্ড মুফতী শাইখ মুহাম্মাদ বিন ইবরাহীম (রহ.) বলেন, নারী যখন প্রাপ্ত বয়স্ক হয়, আর তাকে বিবাহের জন্য দ্বীন ও চরিত্রের দিক থেকে পছন্দনীয় উপযুক্ত পাত্র প্রস্তাব করে, আর তার মত পাত্রকে প্রত্যাখ্যান করার জন্য অভিভাবক কোন দোষ খুঁজে না পায়, পাত্রও নিজের যোগ্যতাকে প্রমাণ করতে সক্ষম থাকে, তখন ঐ নারীর অভিভাবকের উপর আবশ্যক হচ্ছে পাত্রের আবেদন গ্রহণ করা এবং তার সাথে তাদের মেয়ের বিবাহ দেয়া। সে যদি তা করতে অসম্মত হয়, তবে পাত্রির পছন্দের বিষয়টির প্রতি গুরুত্বারোপ করার ব্যাপারে সতর্ক করতে হবে। তারপরও যদি অসম্মতিতে স্থির থাকে,তবে তার অভিভাবকত্ব বাতিল হয়ে যাবে। তখন অভিভাবকত্ব পরবর্তী নিকটাত্মীয়দের প্রতি স্থানান্তরিত হয়ে যাবে। (ফতোয়া শাইখ মুহাম্মাদ বিন ইবরাহীম ১০/৯৭) শাইখ উছাইমীন (রহ.) বলেন, অভিভাবক যদি দ্বীন ও চরিত্রের দিক থেকে পছন্দনীয় উপযুক্ত পাত্রের প্রস্তাবকে প্রত্যাখ্যান করে এবং তার সাথে বিবাহ দিতে অস্বীকার করে, তবে তার অভিভাবকত্ব পরবর্তী অধিকতর নিকটাত্মীয়ের নিকট স্থানান্তরিত হয়ে যাবে। কিন্তু তারাও যদি অস্বীকার করে, তবে শরীয়ত সম্মত হাকেমের নিকট অভিভাবকত্ব স্থানান্তরিত হবে। তখন শরীয়ত সম্মত হাকেম বা শাসক তার বিবাহ দিয়ে দিবে। (ফতোয়া নূরুন আলাদ দারব, অধ্যায়ঃ ৩১৩)

    ইবনুল মুনযির (রহঃ) বলেন, বিদ্বানদের ঐক্যমত আছে যে সুলতান নারীর বিবাহ দিয়ে দিবে যদি সে বিবাহ করতে চায় এবং (দ্বীন ও চরিত্রের দিক থেকে) উপযুক্ত পাত্র পছন্দ করে থাকে; কিন্তু অভিভাবক তার বিবাহে বাধা প্রদান করে। (আল ইজমা ১/৭৮) [↑](#footnote-ref-16)
17. G nv`xm †\_‡K eySv hvq, niZvj Ae‡iva Pj‡e bv| [↑](#footnote-ref-17)
18. G nv`xm †\_‡K eySv hvq, mevB‡K HK¨e× \_vK‡Z n‡e| `jv`wj Kiv †Kvb my‡hvM †bB| [↑](#footnote-ref-18)
19. ............

    GK e¨w³ Avey eKi (iv:)Gi mv‡\_ `ye©¨envi KiwQ‡jv| mvnvex Avey evihv (iv:) ej‡jb; ÒAvwg wK Ii M`©vb Dwo‡q w`‡ev? Avey eKi (iv:) ej‡jb: im~j (m.)Gi c‡i G AwaKvi Avi Kv‡iv bvB|Ó (Avngv`, bvQvqx) hviv im~j (m.)Gi Aegvbbv Ki‡e Zv‡`i‡K nZ¨v Kiv hv‡e| Z‡e mvnvexi Aegvbbv Ki‡j nZ¨v Kiv hv‡e bv, Ab¨ mvRv w`‡Z n‡e| [↑](#footnote-ref-19)
20. G ai‡Yi Avgj‡KB we`AvZ ejv nq| we`AvZ Ki‡j Avjøvvn ‡h bex (m)-Gi gva¨‡g Bmjvg‡K c~Y© K‡i‡Qb - Zv‡Z m‡›`n ev Awek¦vm Kiv nq| gyAvgvjv‡Zi †¶‡Î †Kvb wRwbm (†hgb Lv`¨, cvbxq, †cvkvK, hvbevnb BZ¨vw`) m¤ú‡K© KziAvb I nv`x‡m wb‡lavÁv bv \_vK‡jB Zv Rv‡qh| wKš‘ Bev`‡Zi †¶‡Î †Kvb Avgj m¤ú‡K© KziAvb I nv`x‡m wb‡lavÁv bv \_vK‡jB Zv Rv‡qh n‡e bv; eis Zv Rv‡qh nIqvi Rb¨ Aby‡gv`b jvM‡e| †Kvb Avgj †hgb gxjv`, Dim, wbtk¦v‡mi gva¨‡g wRwKi hw` mIqv‡ei KvR nZ Z‡e bex (m.) Aek¨B e‡j †h‡Zb| [↑](#footnote-ref-20)
21. ..............

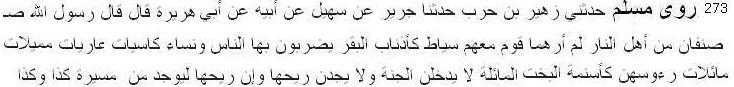
    ইবনুল জাওযী বলেছেন আবুল বুখতারী থেকে যথাযথ সনদে জানা গেছে, ইবনে মাছউদ রা.-কে একজন খবর দিলেন, মসজিদে মাগরিব সালাতের পর একদল লোক বসা আছে। তাদের একজন বলছে এত বার তাকবীর বল, তারা তাকবীর বলছে। সে বলছে এত বার তাসবীহ বল, তারা তাসবীহ বলছে। সে বলছে এত বার তাহমীদ বল, তারা তাহমীদ বলছে। ইবনে মাছউদ বললেন, যখন তাদেরকে এটা করতে দেখবে তখন আমাকে খবর দিও। তিনি তাদের কাছে এলেন ও বসলেন। যখন তারা যা বলত তা বলতে লাগল, ইবনে মাছউদ বললেন, আমি ইবনে মাছউদ, যে আল্লাহ ছাড়া কোন উপাস্য নেই তার শপথ, তোমরা অবশ্যই বিদআত ও যুলুম করছ। নতুবা তোমরা মুহম্মদ স.-এর সাহাবীদের চেয়েও বেশি এলেম রাখ! (তালবীছু ইবলীস)

    অতএব মীলাদ পড়লে, কুলখানি, চেহলাম করলে সওয়াব হবে না। বরং গুনাহ হবে। এগুলি ইসালে সওয়াব নয় বরং ইসালে আযাব। কারণ ......

    [↑](#footnote-ref-21)
22. GB `j n‡”Q LvwiRx `j| ‡evSv hv‡”Q ‡ewk †ewk Bev`Z Ki‡jB eo eyRyM© nIqv hvq bv| Bev`Z Ki‡Z n‡e mybœZ Abyhvqx| [↑](#footnote-ref-22)
23. mnxn gymwj‡gi eY©bvq Av‡Q ZLb bex (m.) ej‡eb, `~i nI hviv Avgvi `x‡b Avgvi c‡i weK…wZ XywK‡q‡Q|Ó [↑](#footnote-ref-23)
24. উমার (রা.) বিশিষ্ট সাহাবী হওয়া সত্তেও তার ফতোয়া পরিবর্তন করেছেন দলীল পেয়ে। [↑](#footnote-ref-24)
25. mvC` web hyev‡qi †\_‡K ewY©Z, Rv‡nwjqv‡Zi hy‡M Avie Kexjv¸wji g‡a¨ ninv‡gkv hy× †j‡M \_vKZ| GKwU †MvÎ Ab¨ GK †Mv‡Îi wKQz bvix I `vm nZ¨v K‡iwQj| c‡i ¶wZM¯Í †Mv‡Îi †jv‡Kiv Bmjvg Keyj K‡i| wKš‘ Zv‡`i e`jv †bqvi AviRy Rvix \_v‡K| hLb Zv‡`i abej I Rbej evoj Zviv Gjvb Kij, Avgiv Avgv‡`i wbnZ bvix I `vm‡`i e`jv wbe Zv‡`i cyiyl I ¯^vaxb †jvK‡`i‡K nZ¨v K‡i| G NUbvi ci GB AvqvZ bvwhj nq: <<¯^vaxb †jv‡Ki e`jvq ¯^vaxb †jvK, `v‡mi e`jvq `vm, bvixi e`jvq bvix| (evKviv :178) >> Z‡e GB wb‡`©k wQj `yB †Mv‡Îi nvbvnvwbi e¨vcv‡i †hLv‡b nZ¨vKvix‡K wPw-Z Kiv m¤¢e wQj bv| c‡i <<Rxe‡bi e`jvq Rxeb ( gvwq`v:45) >> GB AvqvZ bvwhj n‡j Av‡Mi AvqvZ iwnZ n‡q hvq| GB Avqv‡Z gKZzj e¨w³i e`‡j †Kej Kv‡Z‡ji cÖvY`Ð w`‡Z wb‡‡`©k †`qv nq| (Be‡b KvQxi)

    Dgi (iv:) Zvi wLjvd‡Zi mg‡q wZb e¨w³ wg‡j GK `vm‡K nZ¨v Kivq D³ wZbRb‡KB g„Z¨y`Ð †`b| Gici wZwb e‡jb, mvbvevmx mK‡j wg‡j hw` Zv‡K nZ¨v KiZ Z‡e Avwg mKj mvbvevmx‡K g„Z¨y`Ð w`Zvg| (mnxn eyLvix) [↑](#footnote-ref-25)
26. AvwjgMY GKgZ †h, wbKvn Kivi D‡Ï‡k¨ hw` †Kvb bvix‡K ‡`Lv gv‡b Zvi †Pnviv †`Lv|

    bex (mt) e‡jb, Bnivg evav bvix †Pnviv XvK‡e bv Ges `mZvbv ci‡e bv| (wZiwghx: mnxn) GB nv`xmwU †\_‡K QvweZ nq †h n‡Ri mgq Qvov bvix‡`i Rb¨ †Pnviv †X‡K ivLvB DwPZ| Pvi Bgvg, Be‡b nvhg, Be‡b Zvqwgqv Ges eZ©gvb hy‡Mi kv‡qL web evh, Avj DQvBgxb mK‡jB †Pnviv XvKv‡K IqvwRe e‡j‡Qb|

    gymwjg †iIqv‡qZ K‡i‡Qb, imyjyjøvn (m.) e‡jb, Òযেসব নারী, যারা কাপড় পরিধান করেও নাংগা থাকে, পুরুষদের নিজেদের দিকে আকৃষ্ট করতে চেষ্টা করে আর নিজেরাও পুরুষদের প্রতি ঝুঁকে পড়ে, তাদের মাথা উষ্ট্রের ঝুঁকেপড়া চুটের মতো হবে, তারা জান্নাতে প্রবেশ করবে না, তার সুগন্ধিও তারা পাবে না। যদিও জান্নাতের সুঘ্রাণ বহু দূর পর্যন্ত ছড়িয়ে পড়বে। (মুসলিম)

    m~iv Avnhv‡ei 59 b¤^i Avqv‡Zi e¨vL¨vq Be‡b AveŸvm (iv:) e‡jb, ÒAvjøvn gymwjg bvix‡`i‡K Av‡`k K‡i‡Qb †h; Zviv hLb cÖ‡qvR‡b N‡ii evB‡i hv‡e; ZLb †hb gv\_vi Dci †\_‡K Pv`‡ii Ask Szwj‡q gyLgÛj †X‡K †bq|Ó

    Be‡b nvhg Av›`vjymx e‡jb, wRjeve n‡”Q evB‡ii Kvco hv Zvgvg kixi‡K †X‡K iv‡L (gynvjøv)

    Avwqkv (iv:) †\_‡K ewY©Z, im~j (m.) e‡jb, Ò**†n Avmgv, hLb †Kvb †g‡q ev‡jMv nq ZLb Zvi Rb¨ Rv‡qh bq Zvi kix‡ii †Kvb Ask †`Lv‡bv GUv GUv ev‡`**Ó e‡j wZwb Zvi †Pnviv I nv‡Zi w`‡K Bkviv Ki‡jb|Ó (Avey `vD` 4092) Avey `vD` ewY©Z nv`xm hv‡Z †Pnviv †Lvjv ivLv Rv‡qR ejv n‡q‡Q nv`xmwU gyimvj|

    GK`v fvwZRx nvdmv web‡Z Avãyi ingvb gv\_vq GKwU cvZjv Iobv w`‡q Avwqkv (iv:)Gi mv‡\_ †`Lv Ki‡Z Av‡mb| wZwb †mUv wb‡q wQ‡o ‡d‡jb Ges e‡jb, Zzwg wK Rvb bv Avjøvn m~iv b~‡i Kx e‡j‡Qb? Zvici GKUv cyiy Iobv Avwb‡q Zv‡K †`b| (মুআত্তা) GK`v bex (mt) e‡jb, †Kvb bvix m‡e©vËg? †KD ej‡Z cvij bv| Avjx (ivt) evwo wM‡q dvwZgvn (ivt) †K ej‡jb| dvwZgvn (ivt) ej‡jb, H bvix m‡e©vËg hv‡K †Kvb (gvnivg) cyiyl †`‡L bv Ges †h †Kvb cyiyl‡K †`‡L bv| [↑](#footnote-ref-26)
27. gymwjg‡`i wKiAv‡Zi gva¨‡g mvZwU nidB gvndzh Av‡Q| DQgvb (iv.) Kzivqkx nidwU msKjb K‡i‡Qb Ges GUvB †ewk cov nq| Ab¨ nid¸wjI c‡i wjwLZ n‡q‡Q Ges wKZve AvKv‡i cvIqv hvq| mKj ni‡dB mgvb m~iv Av‡Q| GKB Kb‡U›U Av‡Q| ïay wKQz RvqMvq AvÂwjK kã ev weKí kã Av‡Q Avi weQz evK¨ KZ©„ev‡P¨i e`‡j Kg©ev‡P¨ Av‡Q| ‡hgb gvAv-Gi RvqMvq wgb, Bn‡bi RvqMvq mydd, LywjKvZ-Gi RvqMvq LjvKZz BZ¨vw`| [↑](#footnote-ref-27)
28. wZiwghx e‡jb, Òmb` nvmvb| Avgiv BqvwR` dv‡iQx Qvov Ab¨ Kv‡iv †\_‡K GB eY©bv cvBwb|Ó nvwKg e‡jb, Òmb` mnxn|Ó hvnvex Zv‡K mg\_©b K‡i‡Qb|

    [↑](#footnote-ref-28)
29. GB nv`xm e‡j wL÷vbiv `vwe K‡i †h bex (m.) KziAv‡bi †Kvb ‡Kvb Ask msiwÿZ nqwb| bex (m.) KziAv‡bi †Kvb Ask cyiv fz‡j †M‡Qb Zv bq| A‡bK mgq †jv‡K gyL¯Í welq mvgwqKfv‡e g‡b Ki‡Z cv‡i bv, Z‡e c‡i g‡b c‡o| eis cov I fz‡j hvIqv gyL¯ÍKiY c×wZi Ask| GUv A¯^vfvweK bq ev G‡Z Zv¾e nIqvi wKQz †bB| Avjøvn e‡jb, আমি আপনাকে পাঠ করাতে থাকব, ফলে আপনি বিস্মৃত হবেন না আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তা ব্যতীত। নিশ্চয় তিনি জানেন প্রকাশ্য ও গোপন বিষয়। (87:6-7)

    bex (m.)‡K wReivBj (Av.) cªwZ igvhv‡b cyiv KziAvb ïbv‡Zb| [↑](#footnote-ref-29)
30. Avjøvn e‡jb, তোমরা বল, আমরা ঈমান এনেছি আল্লাহর উপর এবং যা অবতীর্ণ হয়েছে আমাদের প্রতি এবং যা অবতীর্ণ হয়েছে ইব্রাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব এবং তদীয় বংশধরের প্রতি এবং মূসা, ঈসা, অন্যান্য নবীকে পালনকর্তার পক্ষ থেকে যা দান করা হয়েছে, তৎসমুদয়ের উপর। আমরা তাদের মধ্যে পার্থক্য করি না। আমরা তাঁরই আনুগত্যকারী।( 2:136)

    eZ©gvb evB‡ej ZvIivZ-Bbhxj bq| Z‡e G¸wji g‡a¨ ZvIivZ-Bbhx‡ji D×…wZ \_vK‡Z cv‡i| [↑](#footnote-ref-30)
31. bvmviviv g‡b K‡i‡Q gwiqvg‡K g~mv I nviæ‡bi †evb ejv n‡q‡Q| Avm‡j gwiqvg Av.-Gi fvB‡qi bvg wQj nviæb - hv bex nviæ‡bi bv‡g ivLv n‡qwQj| gwiqvg Av.-Gi wcZv Bgiv‡bi bvg ivLv n‡qwQj g~mv I nviæ‡bi wcZv Bgiv‡bi bv‡g| GLbI wL÷vbiv Gai‡Yi K\_v e‡j `vwe K‡i †h KziAv‡b fzj Av‡Q| KziAvb I nv`xm m¤ú‡K© †egvjyg gymwjgiv Gme K\_vq weåvšÍ nq A\_P Zv‡`i Gme `vwe wVK bq| .... [↑](#footnote-ref-31)
32. gymvdvnv GK nvZ w`‡q KivB mybœZ| GK nvZ gv‡b Wvb nvZ| gymvdvnvi mKj nv`x‡m nvZ kãwU GKeP‡b e¨eüZ n‡q‡Q|

    `yB nv‡Z gymvdvnvi c‡ÿ `jxj:

    1. ewY©Z nv`x‡m nvZ GKeP‡b \_vK‡jI †`v‡bv nvZ eyS‡Z n‡e| Avgv‡`i e³e¨: Aviwe‡Z `yB nvZ, `yB †PvL, `yB cv eySv‡Z memgq wØePb e¨eüZ nq| ‡Pv‡ii nvZ KvU ej‡j wK Avcwb `yB nvZ eyS‡eb?
    2. bex (m.) Zvi `yB nvZ w`‡q Be‡b gvmD‡`i GKwU nvZ a‡ib Ges Zvkvnû` wkÿv †`b| (eyLvix, gymwjg) Avgv‡`i e³e¨: IUv gymvdvnv wQj bv|
    3. nv¤§v` web hv‡q` Be‡b gyeviv‡Ki mv‡\_ `yB nvZ w`‡q gymvdvnv K‡ib| (eyLvix gyAvjøvK mb‡`)

    Avgv‡`i e³e¨: GB eY©bv †\_‡K mybœZ Qv‡eZ nq bv| [↑](#footnote-ref-32)
33. GB nv`xm ‡\_‡K eySv hvq †h bex (m.)-Gi ‡kLv‡bv †`vqv KivB DËg| wb‡Ri fvlvq ev Ab¨ †Kvb Avwj‡gi Kiv †`vqvI Ki‡Z AvcwË †bB| Z‡e wb‡Ri fvlvq ev Ab¨ †Kvb Avwj‡gi Kiv †`vqv fzj kã \_vK‡Z cv‡i ev Av`‡ei †Ljvd wKQz n‡q †h‡Z cv‡i| ZvQvov bex (m.)-Gi ‡kLv‡bv †`vqv Keyj nIqvi m¤¢vebv †ewk|

    ..... [↑](#footnote-ref-33)